

पूर्वाशा

वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका

चौंतीसवें संस्करण – 2024-2025



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

मेघालय, शिलांग - 793001



श्री लहुंखोथांग हंगसिंग, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया।



श्रीमती धनलक्ष्मी चौरसिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया।



श्री कैल्विन हैरिस खर्शिंग, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया।



स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराने के उपरांत शिलांग स्थित आई.ए. एण्ड ए.डी. कार्यालयों के समूह अधिकारीगणों के सामूहिक छायाचित्र।

“पूर्वाशा”

वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका

अंक - चौतीस

वर्ष : 2024 - 2025

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
•	पूर्वाशा परिवार		i
•	राजभाषा प्रतिज्ञा		ii
•	हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री जी का संदेश		iii-vi
•	प्रधान महालेखाकार का संदेश		vii
•	समाचार-पत्र कतरन		viii
•	सम्पादकीय		ix
•	समाचार-पत्र कतरन		x
•	आपके पत्र		xi-xvi
1.	माँ	श्रीमती धनलक्ष्मी चौरसिया	1
2.	सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा की स्थिति : वास्तविकता और आवश्यक सुधार	श्री रितेश आनंद	2-4
3.	रिशते	मुहम्मद जियाऊल हक	5
4.	दिल्ली की गलियों से उत्तर-पूर्व की वादियों तक का सफर	श्री पीयूष हलदर	6
5.	मेघालय की जीवंत धरती : एक हरे स्वर्ग की कहानी	श्री जितिन कुमार	7
6.	गाँव की जिंदगी	श्री संदीपन चौधरी	8
7.	पछतावा	श्रीमती रोज बेगम	9-10
8.	भूख - गरीबी की उपहार	श्री नीरज कुमार गुप्ता	11
9.	जिंदगी की कीमत	सुश्री शुभोनिता दास	12
10.	हॉर्नबिल महोत्सव : नागालैंड की संस्कृति की आत्मा से साक्षात्कार	श्रीमती सुभ्रा हलदर	13

11.	कॉलेज के रंग, यादों के संग	श्री अमित कुमार वर्मन	14
12.	गुवाहाटी महानगर	श्रीमती शाहनाज बेगम	15-16
13.	छायाचित्र एवं समाचार-पत्र कतरन		17-42
14.	सादा जीवन और उच्च विचार	श्री सौम्यदीप चौधरी	43
15.	कल का क्या भरोसा	श्री सुजीत कुमार दास	43
16.	खासी भाषा : एक सांस्कृतिक धरोहर	श्री ईश्वर सिंह	44
17.	पूर्वोत्तर की वादियाँ	सुश्री श्रुति हलदर	45
18.	शिलांग में बाहरी लोगो का जीवन : समस्याएँ, भावनाएँ और योगदान	श्रीमती संगीता मिंकी	46-48
19.	कहानी उसका हौसले की	श्रीमती सरिता देवी	49
20.	काजीरंगा नेशनल पार्क	श्रीमती मुमताज बेगम	50-51
21.	मेघालय की मातृसत्तात्मक समाज की कहानी	सुश्री भारती सिंह	52-53
22.	दोस्त का महत्व	श्रीमती इबानिल्ला रिंझाह	53
23.	क्यूबिकल की कहानी, यारियों की जुबानी	श्री सुमित कुमार बर्मन	54
24.	नमक कितना जरूरी है	श्रीमती अपर्णा रानी दास	55-56
25.	मत बाँटो इंसान को	सुश्री सुनाक्षी दास	57
26.	दादी माँ की कहानियाँ	सुश्री अमृता दास	58-59
27.	गुणों की खान नारियल	श्रीमती सुनीता दास	59
28.	व्यवहार में दृढ़ता कैसे लाएं	मुहम्मद अरिफुल हक	60-61
29.	बिहार की बाढ़ समस्या : एक गहन अध्ययन और स्थायी समाधान की खोज	श्री यश नायक	62-64
30.	हिन्दी पखवाड़ा 2024 : एक संक्षिप्त विवरण		65
31.	कार्यालय से सेवा निवृत्त कर्मिकों के विवरण		66

- टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
- मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
- शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
- अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए।

“पूर्वाशा परिवार”

संरक्षक

श्री लहुंखोथांग हंगसिंग
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
मेघालय, शिलांग - 793001

संपादक

श्रीमती धनलक्ष्मी चौरसिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

सदस्य

श्री अहमद हसनुज्जमान चौधुरी	-	उप महालेखाकार
श्री पी.आर. रिंग्ग्लेम	-	प्रधान महालेखाकार के सचिव
श्री एक्वारियस मैथ्यू	-	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
मुहम्मद जियाउल हक	-	सहायक निदेशक (राजभाषा)
श्रीमती अमण्डा डब्ल्यू. लिंगस्कोर	-	वरिष्ठ अनुवादक
श्री जितिन कुमार	-	कनिष्ठ अनुवादक

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं, रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।



भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान ; निरन्तर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरन्तर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे। अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरन्तर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

हर राष्ट्र के पास अपना चिन्तन होता है, अपनी भावनाएं होती हैं जिसे वह अपनी भाषा में व्यक्त करता है। मैं, यह मानता हूँ कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि उससे बोलने वालों की संस्कृति और संस्कार भी उससे जुड़े होते हैं। भाषा जहाँ अपनी संस्कृति विरासत से उपजी हुई होती है, वहीं वह इस विरासत को आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाती भी है। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल एक अभिव्यक्ति के माध्यम का प्रश्न नहीं है बल्कि, यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और हमारे देश के लोगों के संस्कार से भी जुड़ा है। फिर लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति में तो भाषा का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि जनता तभी कामकाज में सक्रिय रूप से भाग ले सकती है, जबकि राजकाज ऐसी भाषा में हो, जिसे वहाँ की जनता अच्छी तरह से समझ सकें।

- डॉ. शंकर दयाल शर्मा



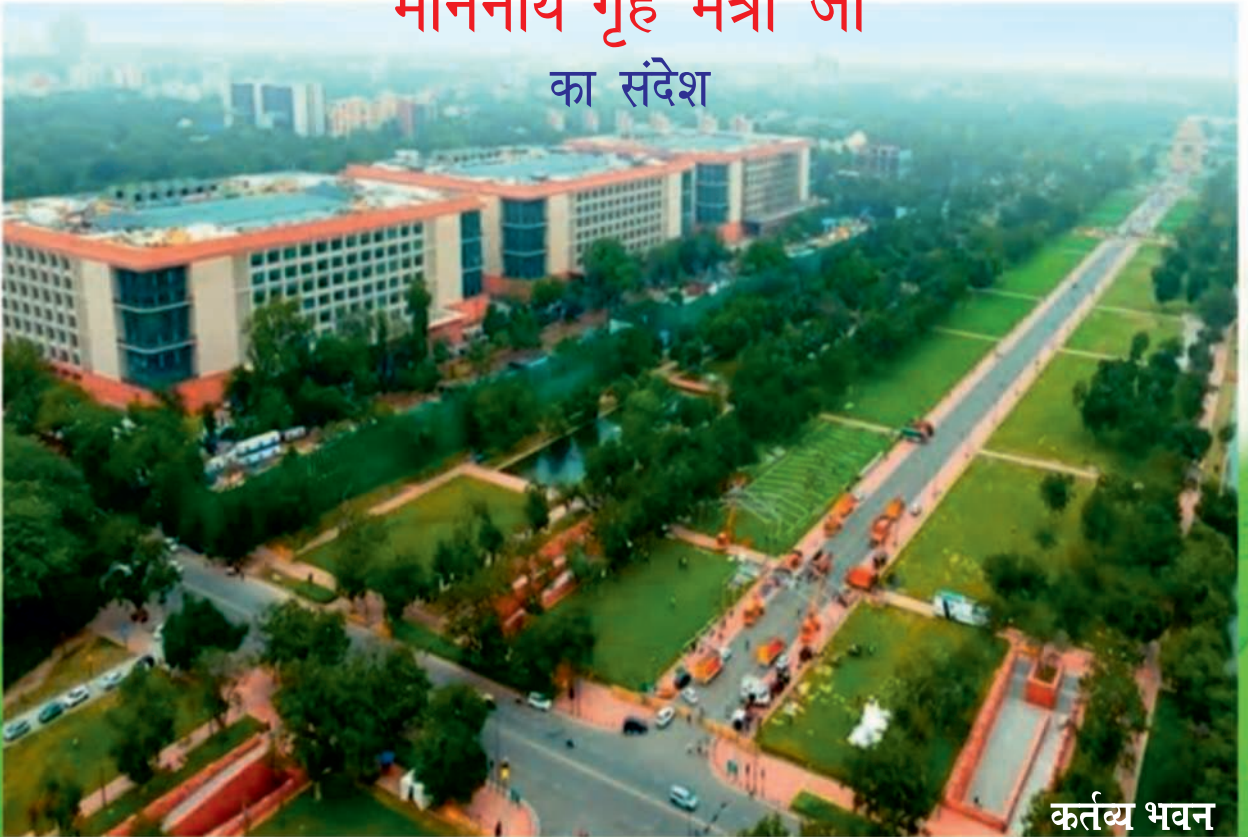


हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश



कर्तव्य भवन

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

**अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार**



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा—प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान—विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल—मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत—प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव—देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार-विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार-प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी-20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदय को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13-14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी-नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:

“देसिल बयना सब जन मिट्टा।”

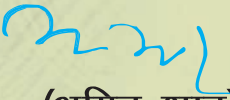
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

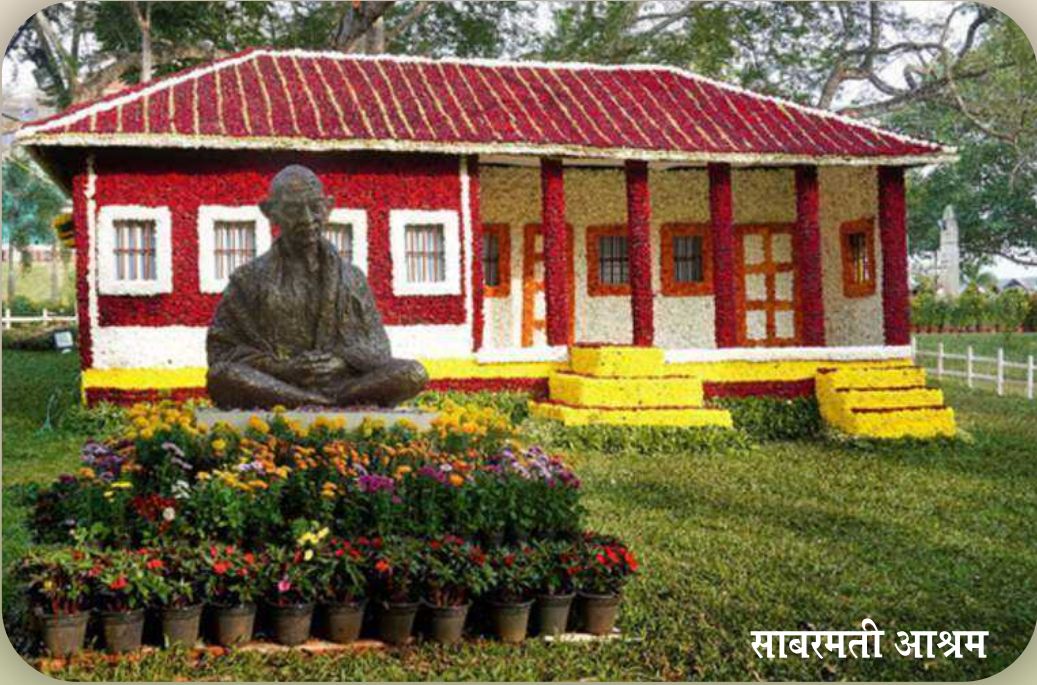
आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025


(अमित शाह)



साबरमती आश्रम



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

मेघालय, शिलांग

PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
MEGHALAYA, SHILLONG.



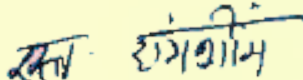
संदेश

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग की वार्षिक हिन्दी पत्रिका “पूर्वाशा” के 34 वें संस्करण आपके समक्ष समर्पित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

मैं, स्टाफ के सदस्यों के साथ-साथ उन सभी कर्मियों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस प्रकाशन के लिए लेख लिखे हैं और मैं, इस पत्रिका को प्रकाशित करने में उनकी कड़ी मेहनत और प्रयासों के लिए संपादकीय टीम और हिन्दी स्टाफ की सराहना करता हूँ।

हम सभी जानते हैं कि हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है और सरकारी कर्मचारी होने के नाते, हिन्दी सीखना और अपने दैनिक सरकारी कार्यों में इसका प्रयोग करना हमारा कर्तव्य है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति रुचि जगाएगी, हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देगी और लोकप्रिय बनाएगी।

पत्रिका की सफलता की शुभकामनाओं सहित।


(लहुंखोथांग हंगसिंग)

सही दिशा, सही खबर

दैनिक पूर्वोदय

■ कार्यालय प्रधान



इस सीके पर निम्नलिखित सूचनाएं

इस अवसर पर कर्णालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षी) और कर्णालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदार) की वार्षिक रिपोर्ट पर विचारों का अंतर, पूर्वाह्न के 3.30 अंश और मध्य पूर्वाह्न सत्र के 1.30 अंश पर शिवाजीन मण्डप अतिथि तथा तब के, मेलाते-

इस अवसर पर वर्ष 2023-24 के हिंदी में कार्य करने वाले क्रेडिट अनुभवा अध्यापकों को विषयगत रसिग सौल्लेख मुख्य अतिथि के कर-कमलों द्वारा प्रदत्त किया गया। इसके अलावा विभिन्न हिंदी

प्रशिक्षणकार्ग जैसे अवाधरी, अनुवाध, हिंदी निवाध लेखन एवं हकललेखन, दललेली और अलु गायन हल्ले, दललेलीलाली के कल्लेलाओ के प्रलय, हिंदी और दल्लेय पुनललर के ललर नलद पुनललर अललर 2,500, 2,000 अलर 1,500 अलर समुह अलललललले के कलललले हलल प्रलय कलर गलर। दल अलललर एर सलललुकी के कललललर कल वी अललेलन कलल। एल एल वलले वी ठललल प्रलय कलर गल। अल ले हल वी हिंदी लललललल कललललर कल ललललल कललललल प्रलय नलललेखललर (लेखन एवं हकललरी), ललललल के हल ललललललललर (दललललन), गलुल वलद वील के ललललललर ललल के सलल कलल गल।

दिग्विधा लिख सकें। हमारे कार्यालय के लिए यह गर्व की बात है कि राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हम हिंदी कार्याशला का आयोजन कर रहे हैं। विससे, कार्यालयीन काम-काज में हिंदी

के प्रयोग को बढ़ावा मिले एवं कार्यशाला के माध्यम से हम हिंदी में कार्य करने की शिक्षा को दूर कर सकें। इसके अलावा मसीदा लेखन, पत्र-लेखन आदि में भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने में हम

समस्त लोग। कार्यशालाओं के जरिए लिखावट एवं पत्राचार में भी सुधार हो सके है। उन्होंने इस आशयक की है, कि सभी प्रतिभागियों कार्यशाला का भरपूर लाभ उठावेंगे साथ ही इस कार्यशाला के माध्यम से सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में काम करने में सहायता मिलेगी। एक कार्यशाला में संकाय सदस्यों के रूप में प्रोफ़ेसर पार्षद सारथी पांडेय, क्षेत्रीय निदेशक, शिलांग उपस्थित थे, जिन्होंने प्रथम सत्र में टिपिंग एवं मशीन लेखन और द्वितीय सत्र में हिन्दी कायावर पर व्याख्यान किया तथा प्रतिभागियों द्वारा इसका अभ्यास भी कराया। इस कार्यशाला में कुल 15 अधिकारी एवं कर्मचारी ने भाग लिए। एक कार्यशाला का समापन समारोह हिन्दी ब्रज के सहचक निदेशक (प्रशासकीय), मुम्बई विद्यालय हज के धनवादा शरण से हुआ।



सम्पादकीय

भाषा के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि भाषा का संबंध संस्कृति और संस्कारों से है। इसके अलावा यह हमारे जीवन शैली, रीति-रिवाज से भी जुड़ी हुई है। पत्रिका एक साधन है, जहाँ भाषा के द्वारा स्थानीय संस्कृति तथा संस्कारों से खुशबू बिखेरती है। हिन्दीतर क्षेत्र में स्थित पूर्वोत्तर क्षेत्र के मेघालय, शिलांग की वार्षिक हिन्दी पत्रिका “पूर्वाशा” के जरिए न केवल हम राजभाषा को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं, अपितु मेघालय की प्रकृति व मनोरम दृश्य से भी परिचय कराने का प्रयास करते हैं।

यह पत्रिका एक साधन है, जो हमारे विचारों को वाणी देने तथा लिपिबद्ध करने का कार्य करती है। हिन्दी भाषा विश्व की तमाम भाषाओं में से एक मधुर तथा वैज्ञानिक भाषा है एवं भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हिन्दी में पत्रिका प्रकाशित करने से हिन्दी अपना संदेश लिए बृहत्तर क्षेत्र तक सहजता से पहुँचती है। “पूर्वाशा” के साधन से यह हमारा निरन्तर प्रयास बना रहेगा कि पूर्वोत्तर सहित पूरे राष्ट्र में हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होता रहे तथा हिन्दी के प्रति सभी अपनी निष्ठा कायम रखें।

हिन्दी के प्रति हमारा लगाव एवं साहित्य के प्रति रुचि के फलस्वरूप “पूर्वाशा” का 34 वें अंक आपके समक्ष समर्पित करते हुए मुझे बेहद हर्ष हो रही है। इसे आसान एवं रोचक और तथ्यपरक रूप से सँवारने की हमारी कोशिश में कुछ त्रुटियाँ हो सकती हैं, भविष्य में इसे और अधिक निखार लाने हेतु आपके सुझाव एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है।

शुभकामनाओं सहित।

धनलक्ष्मी

(धनलक्ष्मी चौरसिया)

सम्पादक एवं

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

पूर्वांचल प्रहरी

गुवाहाटी और जोरहाट से प्रकाशित

पूर्वोत्तर भारत का प्रथम हिंदी दैनिक



36

बुधवार 02 अक्टूबर 2024

शिलांग में संयुक्त रूप से हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह

शिलांग: कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 30 सितम्बर, 2024 को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. किरमिका मारबनिपांग, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर एवं तीर्थ विश्वविद्यालय (नेहू), शिलांग उपस्थित थे। इस अवसर पर मैथ्यूस मैथ्यू, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में सभी उपस्थित मुख्य अतिथि एवं तीर्थ कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने संबोधन में राजभाषा से संबंधित विभिन्न जानकारी दीं तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की। उन्होंने अवगत कराया कि हिन्दी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गैर-हिन्दी भाषी कर्मियों को हिन्दी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिन्दी भाषा में दक्ष बनाना है। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिन्दी ई-एचआरओ कम्पलेंट 'नवीन' का 19 वें अंक का विमोचन मुख्य अतिथि तथा जॉन के. सेलाटे, महानिदेशक एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कैल्विन हैरिस खाररांग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की पूर्वांश पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों में क्रमशः श्रीमती कनू रानी, सुमित कुमार बर्मन और संजीव कुमार गणेश को सम्मानित किया गया।



में राजभाषा से संबंधित विभिन्न जानकारी दीं तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की। उन्होंने अवगत कराया कि हिन्दी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गैर-हिन्दी भाषी कर्मियों को हिन्दी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिन्दी भाषा में दक्ष बनाना है। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिन्दी ई-एचआरओ कम्पलेंट 'नवीन' का 19 वें अंक का विमोचन मुख्य अतिथि तथा जॉन के. सेलाटे, महानिदेशक एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कैल्विन हैरिस खाररांग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की पूर्वांश पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों में क्रमशः श्रीमती कनू रानी, सुमित कुमार बर्मन और संजीव कुमार गणेश को सम्मानित किया गया।

अंक और 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 19 वें अंक का विमोचन मुख्य अतिथि तथा जॉन के. सेलाटे, महानिदेशक एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कैल्विन हैरिस खाररांग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की पूर्वांश पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों में क्रमशः श्रीमती कनू रानी, सुमित कुमार बर्मन और संजीव कुमार गणेश को सम्मानित किया गया।

पूर्वांचल प्रहरी

गुवाहाटी और जोरहाट से प्रकाशित

पूर्वोत्तर भारत का प्रथम हिंदी दैनिक

An Exclusive Showroom of GOLD & DIAMOND Jewellery, SILVER COIN & SILVER SILLY also available.

S.L.Soni
Sons Jewellers
Ahmed Building
H.B. Road, Fancy Bazar,
Guwahati-781001
Ph: 361-2514637, 3597512

36

बृहस्पतिवार 12 दिसंबर 2024

मेघालय की खबरें

मेघालय : कार्यालय प्रधान महालेखाकार में हिन्दी संगोष्ठी आयोजित

शिलांग: कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग में गत 30 दिसंबर को एक दिवसीय हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का मुख्य विषय 'सरकारी कामकाज में सरल एवं सहज हिन्दी का प्रयोग' था। संगोष्ठी के उद्घाटन संबोधन में कार्यालय के मैथ्यूस मैथ्यू, उप महालेखाकार (प्रशासन) ने कहा कि हमें इस प्रकार के संगोष्ठी का आयोजन कर साक्षर प्रवास करते रहना चाहिए, जिससे कार्यालय के कामकाज में हिन्दी की बढ़ावा देने में सहायता हो। विषय के दोनो पक्ष पर खुलकर



हिन्दी संगोष्ठी में उपस्थित अतिथिगण, अधिकारी एवं कर्मचारी

विचार-विमर्श होता है और अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि आगे की कार्यवाही क्या होगी। उन्होंने

कहा कि आपके सहयोग से हम आनेवाले समय में और भी बेहतर संगोष्ठी आयोजित करने के लिए

प्रयास करेंगे। इस अवसर पर पी. अर. रिजलेम, प्रधान महालेखाकार के सचिव और एक्वायरिस मैथ्यू,

स्थापना अधिकारी भी उपस्थित थे। संगोष्ठी में संकाय सदस्य के रूप में पदवी डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्र, हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष, नेहू शिलांग ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विस्तृत जानकारी दी। संगोष्ठी के समापन से पूर्व कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के मुहम्मद विधात्रन हक, हिन्दी अधिकारी ने सत्र पर सभ्यता रूप में व्यवस्थान दिया। इस संगोष्ठी में कुल 19 अधिकारी एवं कर्मचारियों का उपस्थित थे एवं समापन समारोह हिन्दी अधिकारियों के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

आपके पत्र

1. पत्रिका में सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में श्रीमती शाहनाज बेगम की रचना “राष्ट्रीय एकता”, श्री राजीव कुमार गणेश की रचना “डिजिटल युग की दस्तक: कागज से क्लाउड तक”, श्री शौर्य मिश्रा की रचना “बहुत शानदार बात लिखी” श्री अमित कुमार वर्मन की रचना “सपनों की उड़ान: संघर्ष से सफलता तक”, श्रीमती रोज बेगम की रचना “मन जीते, जग जीते”, श्री एक्वारियस मैथ्यू की रचना “भविष्य में वाहनों के... इलेक्ट्रिक वाहनों की दशा”, श्री विशाल की रचना “क्यू बेवजह मैं बड़ा हो गया”, श्री रितेश आनंद की रचना “भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट व इसकी प्रभावकारिता”, श्री सुमित कुमार वर्मन की रचना “आम आदमी की जिंदगी: संघर्ष और सुकून की कहानी”, श्रीमती मुमताज बेगम की रचना “रोशनी अंधे की”, श्री जॉनीवानडोर मरबनियांग की रचना “प्यारे बच्चे”, श्री यश नायक की रचना “अनुशासन की राह, श्रीमती दिया राजपूत की रचना “कहानी हसीन होनी चाहिए” और श्रीमती संगीता मिंकी की रचना “पूर्वोत्तर की धरती” आदि रचनाएं ध्यानाकर्षित करती हैं।

पत्रिका के माध्यम से “ग” क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका में कार्यालयी चित्र पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत उत्तम है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ “गिरनार परिवार” को पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

ह/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
गुजरात, राजकोट - 360001

2. हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय हैं जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला - 171003

3. पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं; विशेषकर, “राष्ट्रीय एकता”, “भविष्य में वाहनों का ईंधन का स्थानांतरण: हाइड्रोजन ईंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों की दिशा”, “अनुशासन की राह”, “मैंने देखा है”, “तितलियाँ”, “मन जीते जग जीते”, “सपनों की उड़ान” आदि।

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएंगी। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहें, यही हमारी शुभकामना है।

ह/-

व. उप महालेखाकार (प्रशा.)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
पटना, बिहार - 800001

4. पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री एक्वारियस मैथ्यू का “भविष्य में वाहनों के ईंधन का स्थानांतरण: हाइड्रोजन ईंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों की दिशा” एवं श्री जितिन कुमार का “हिन्दी दिवस 2024: राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक” बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्रीमती संगीता मिन्की की “पूर्वोत्तर की धरती”, श्री विशाल की “क्यूँ बेवजह मैं बड़ा हो गया” एवं श्री संजीव कुमार गणेश की “डिजिटल युग की दस्तक” कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)
नई दिल्ली - 110024

5. पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनायें अतीव ज्ञानवर्धनीय, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्ही कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

ह/-

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
त्रिपुरा, अगरतला - 799006

6. पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं :- रचनाकार, श्री संजीव कुमार गणेश की रचना “डिजिटल युग की दस्तक: कागज से क्लाउड तक”, श्री मुहम्मद जियाउल हक की रचना “हिन्दी दिवस”, श्री एक्वारियस मैथ्यू की रचना “भविष्य में वाहनों के ईंधन का स्थानांतरण: हाइड्रोजन ईंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों की दिशा”।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

(हिंदी अधिकारी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

पंजाब, चंडीगढ़ - 160017

7. पत्रिका की साज-सज्जा तथा आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक और सुंदर है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मनोरंजक व ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर, श्रीमती रोज बेगम द्वारा रचित लेख “मन जीते जग जीते” एवं श्री अमित कुमार वर्मन द्वारा रचित कविता “सपनों की उड़ान: संघर्ष से सफलता तक” और श्रीमती केशु रानी द्वारा रचित कविता “मैंने देखा है” अत्यंत प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को सहस्र बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय

केरल, तिरुवनंतपुरम - 695001

8. पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर “मन जीते जग जीते”, “भविष्य में वाहनों के ईंधन का स्थानांतरण: हाइड्रोजन ईंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों की दिशा”, “क्यू बेवजह मैं बड़ा हो गया”, “मैंने देखा है”, “पिता पर खूबसूरत कविता” आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

ह/-

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

म.प्र., भोपाल - 462011

9. आपकी पत्रिका के आकर्षक पृष्ठ के साथ-साथ इसकी साज-सज्जा सुंदर है और रचनाओं की विषयवस्तु भी प्रशंसनीय है।

“पूर्वाशा” के संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

ह/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

राजस्थान, जयपुर

10. पत्रिका का नाम “पूर्वाशा” एक अनुकूल एवं सुविचारित नाम है। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं साजसज्जा आकर्षक है तथा पत्रिका की पृष्ठभूमि के छायाचित्र अत्यंत मनोरम हैं। पत्रिका के सभी लेख एवं कविताएँ पठनीय हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष रूप से बधाई का पात्र है। “पूर्वाशा” पत्रिका परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए संवाद पत्रिका परिवार की ओर से अनेकानेक शुभकामनाएं।

ह/-

(पूनम शर्मा)

(हिंदी अधिकारी)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना)

नई दिल्ली - 110002

11. पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से श्रीमती रेखा राजपूत का लेख “जरा सोच समझकर”, श्री एक्वारियस मैथ्यू का लेख “भविष्य में वाहनों के इंधन का स्थानांतरण: हाइड्रोजन इंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों की दिशा”, श्री अमित कुमार वर्मन की कविता “सपनों की उड़ान: संघर्ष से सफलता तक”, श्री विशाल की कविता “क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया” प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

ह/-

(उदय प्रताप सिंह)

हिंदी अधिकारी

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,

कर्नाटक, बेंगलूरु

12. पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय व पठनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक-मंडल को हार्दिक बधाई।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

सधन्यवाद।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
चण्डीगढ़

13. पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। पूर्वांश में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से श्री राजेश कमल राजपूत की रचना “चलते रहो”, श्री शौर्य मिश्रा की रचना “बहुत शानदार बात लिखी”, श्रीमती रोज बेगम की रचना “मन जीते जग जीते”, इत्यादि सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

ह/-

हिंदी अधिकारी
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700001

14. पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री विशाल का लेख “क्यों बेवजह मैं बड़ा हो गया”, श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप का लेख “पर्यावरण”, मो. अरिफुल हक का लेख “भारत में दहेज प्रथा”, श्रीमती शाहनाज बेगम का लेख “राष्ट्रीय एकता” आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है।

विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएं।

ह/-

हिन्दी अधिकारी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा - वाणिज्यिक का कार्यालय
बैंगलोर - 560001

15. पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है तथा राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

ह/-

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)

उत्तराखण्ड, देहरादून - 248195

16. पत्रिका की रूपरेखा एवं कलेवर बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है। सभी रचनाकारों की प्रस्तुति सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। इस हेतु सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र आकर्षक हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

ह/-

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रयागराज - 211001

17. पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

ह/-

हिन्दी अधिकारी (प्रभारी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) - II

महाराष्ट्र, नागपुर

18. पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय और रुचिकर हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

ह/-

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),

चण्डीगढ़ - 160020

माँ



- श्रीमती धनलक्ष्मी चौरसिया
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.)

सख्त राहों में भी सफर आसान बन जाएं,
जब माँ की दुआयें अपना असर दिखाएं।

दूर हो जाएं सारी बाधाएं, सारी विफलताएं,
जब माँ अपना आशीष देकर गले लगाएं।

शिशु जब कलरव करे या उत्पात मचाएं,
तब माँ ही उसे दुलारे, वात्सल्य लुटाएं।

बालक बेवजह हठ करके सबको सताएं,
केवल माँ ही उसे समझाकर सही राह दिखाएं।

युवा की उचित अभिलाषा हो या अनुचित आकांक्षाएं,
नैतिकता-अनैतिकता का पाठ तो माँ ही उसे पढ़ाएं।

कई रातें ना सोए माँ, जब बच्चा थोड़ा भी डर जाएं,
खुद लेकर उसकी सारी बलाएं, सारे कष्ट उठाएं।

लाख अवगुणी हो संतान फिर भी माँ को वह भाएं,
माँ की तुलना है असंभव खुद ईश्वर ये दोहराएं।

माँ ही असहाय शिशु को सबल सफल व्यक्तित्व बनाएं,
परिवार संवारे समाज निखारे जीवन में प्रगति लाएं।

विधाता भी बस निश्चिंत होकर सृष्टि रचता जाएं,
क्योंकि माँ तो धरती पर उसके सारे फर्ज निभाएं।

माँ में समाहित संपूर्ण जगत, अंबर, सागर, चंद्रकलाएं,
सर्वस्व अर्पित करके भी हम माँ के ऋणी ही कहलाएं।



सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा की स्थिति : वास्तविकता और आवश्यक सुधार



- श्री रितेश आनन्द
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रस्तावना (भूमिका) - भारत की पहचान उसकी भाषायी विविधता में निहित है। हमारी संस्कृति, हमारी परंपराएँ और हमारा सामूहिक जीवन, भाषाओं की इस समृद्ध धरोहर पर आधारित है। संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया, ताकि यह एक सेतु का कार्य कर सके और पूरे देश में सरकारी कार्यकलापों को सरल बना सके। लेकिन वास्तविकता यह है कि हिंदी का स्थान, विशेषकर केंद्रीय सरकार के हिंदीतर भाषी कार्यालयों में अब भी कमजोर और असमान रूप से प्रयोग में है। सरकार ने इस स्थिति को सुधारने के लिए कई योजनाएँ, कार्यक्रम और प्रशिक्षण सत्र लागू किए हैं। अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन तक दिए जा रहे हैं। फिर भी, जब व्यवहारिक और व्यावहारिक स्थिति को देखा जाए, तो हिंदी का प्रयोग अब भी केवल कागजों और फाइलों तक सीमित है। हिंदी को अपनाने के बजाय कई कर्मचारी केवल योजनाओं और परीक्षाओं में भाग लेकर प्रोत्साहन ले रहे हैं, जबकि उनके दैनिक आधिकारिक कार्यों में हिंदी का वास्तविक उपयोग नहीं हो रहा।

यह आलेख किसी एक विशेष कार्यालय या विभाग की समीक्षा नहीं करता, बल्कि यह एक सामान्य और वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करता है। यह स्थिति

लेखक की व्यक्तिगत चिंता है, जिसे उच्च स्तर पर गंभीरता से देखने और सुधारने की आवश्यकता है।

हिंदी के संवैधानिक और सरकारी प्रावधान -

1. **संविधान का अनुच्छेद 343** : इसमें स्पष्ट कहा गया है कि भारत की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।
2. **राजभाषा अधिनियम, 1963** : इसमें प्रावधान है कि केंद्रीय सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी का उपयोग धीरे-धीरे बढ़ाया जाएगा।
3. **राजभाषा विभाग** : गृह मंत्रालय के अंतर्गत विशेष विभाग बनाया गया है, जिसका उद्देश्य है कि केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़े।
4. **प्रोत्साहन योजनाएँ** : कर्मचारियों को हिंदी टाइपिंग, हिंदी नोटिंग-ड्राफ्टिंग और अन्य परीक्षाओं में भाग लेने के लिए नकद पुरस्कार और पदोन्नति में लाभ दिए जाते हैं।

योजनाएँ और व्यवहारिक स्थिति -

केंद्रीय सरकार और उसके विभागों ने यह सुनिश्चित करने के लिए कि हिंदी का प्रयोग बढ़े, अनेक उपाय किए हैं :-

- हिंदी पखवाड़ा और हिंदी दिवस का आयोजन।
- अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण।
- प्रोत्साहन योजनाएँ, जिनमें परीक्षा पास करने या हिंदी का प्रयोग करने पर नकद राशि दी जाती है।
- वार्षिक रिपोर्टिंग, जिसमें हर कार्यालय को यह बताना होता है कि उन्होंने कितने प्रतिशत कार्य हिंदी में किया।

लेकिन वास्तविकता यह है कि इन योजनाओं और आयोजनों का असर सिर्फ रिपोर्टिंग और कागज़ी कार्रवाई तक ही सीमित है। कर्मचारियों में यह प्रवृत्ति विकसित हो गई है कि केवल परीक्षा देकर, रिपोर्ट तैयार कर और प्रोत्साहन लेकर दिखा दिया जाए कि हिंदी का प्रयोग हो रहा है।

वास्तविक तस्वीर : समस्याएँ -

1. **औपचारिकता का दबाव** - हिंदी दिवस या हिंदी पखवाड़ा केवल औपचारिकता बनकर रह गया है। दो सप्ताह तक हिंदी में भाषण, निबंध प्रतियोगिता या लेखन कार्य होता है, लेकिन उसके बाद वही अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा का वर्चस्व लौट आता है।
2. **प्रोत्साहन की विकृत धारणा** - कर्मचारियों का ध्यान हिंदी के प्रयोग की वास्तविक भावना पर नहीं, बल्कि प्रोत्साहन राशि पर केंद्रित है। वे परीक्षाएं देकर बोनस लेते हैं, लेकिन दैनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग न के बराबर करते हैं।
3. **वरिष्ठ अधिकारियों का व्यवहार** - कई वरिष्ठ अधिकारी अब भी हिंदी को कमजोर

भाषा मानते हैं और आधिकारिक नोट्स या पत्राचार में अंग्रेजी को प्राथमिकता देते हैं। जब तक शीर्ष स्तर से हिंदी को सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक निचले स्तर पर सुधार संभव नहीं।

4. **प्रशिक्षण और क्रियान्वयन में अंतर** - प्रशिक्षण तो कराया जाता है, लेकिन बाद में सुनिश्चित नहीं किया जाता कि वास्तव में अधिकारी / कर्मचारी हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं या नहीं।

5. **सांस्कृतिक हीनभावना** - हिंदीतर भाषी राज्यों में अब भी हिंदी को थोपी गई भाषा मानकर देखा जाता है। वहाँ के कार्मिक हिंदी का प्रयोग करने से बचते हैं।

परिणाम और दुष्प्रभाव -

1. **हिंदी पर विश्वास की कमी** - जब कर्मचारी केवल दिखावे के लिए हिंदी का प्रयोग करते हैं, तो यह साफ संदेश जाता है कि हिंदी केवल इनाम कमाने का माध्यम है, वास्तविक राजभाषा नहीं।
2. **सरकारी धन की बर्बादी** - प्रोत्साहन योजनाओं में हर साल करोड़ों रुपये खर्च होते हैं। लेकिन इसका व्यावहारिक परिणाम न के बराबर है। इसका अर्थ है कि सरकार का धन केवल दिखावे में खर्च हो रहा है।
3. **नागरिकों पर असर** - आम नागरिक, खासकर हिंदी भाषी राज्यों के लोग, जब अपने पत्र हिंदी में भेजते हैं तो उन्हें अंग्रेजी में उत्तर मिलता है। इससे यह भावना पैदा होता है कि राजभाषा हिंदी केवल किताबों में है, जमीन पर नहीं।
4. **प्रशासनिक असमानता** - अंग्रेजी जानने वाले अधिकारियों को अधिक सम्मान और

प्राथमिकता मिलती है, जबकि हिंदी में दक्ष कर्मचारी पीछे रह जाते हैं।

क्या यह औचित्यपूर्ण है ?

यदि हम ईमानदारी से देखें तो यह स्थिति किसी भी रूप में औचित्यपूर्ण नहीं है।

- जब एक तरफ सरकार करोड़ों रुपये खर्च कर रही है और दूसरी तरफ परिणाम शून्य है, तो यह जनधन की बर्बादी है।
- हिंदी को राजभाषा बनाना सिर्फ संविधान की औपचारिकता नहीं, बल्कि यह जनता के प्रति नैतिक जिम्मेदारी भी है।

आवश्यक सुधार और कदम -

1. **शीर्ष स्तर से आदेशात्मक क्रियान्वयन -** वरिष्ठ अधिकारियों को बाध्य किया जाए कि वे अपने सभी नोट्स, टिप्पणियाँ और आदेश हिंदी में लिखें।
2. **प्रोत्साहन की जगह जवाबदेही -** केवल प्रोत्साहन देना पर्याप्त नहीं है। यदि कर्मचारी हिंदी का प्रयोग नहीं करते, तो उनके ए.सी.आर. (वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट) पर असर पड़ना चाहिए।
3. **डिजिटल हिंदी को बढ़ावा -** आज अधिकतर काम ई-ऑफिस और डिजिटल माध्यम से होता

है। ऐसे में हिंदी टाइपिंग, यूनिकोड और डिजिटल टूल्स का प्रयोग अनिवार्य बनाया जाए।

4. **नागरिकों के लिए समानता -** हिंदी भाषी नागरिकों को हिंदी में ही उत्तर देना अनिवार्य हो।
5. **निगरानी तंत्र -** केवल रिपोर्टिंग नहीं, बल्कि वास्तविक निगरानी हो कि कितने पत्र, नोट्स और फाइलें वास्तव में हिंदी में हैं।

निष्कर्ष - हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के सात दशक बीत चुके हैं, लेकिन आज भी इसकी स्थिति कागजी है। यह केवल प्रतियोगिताओं, पखवाड़ों और प्रोत्साहनों तक सीमित है। वास्तविक कार्यसंस्कृति में हिंदी अब भी हाशिये पर है। यह आलेख किसी विशेष कार्यालय या विभाग की आलोचना नहीं है, बल्कि एक सामान्य और वास्तविक स्थिति का चित्रण है। लेखक की यह व्यक्तिगत चिंता है कि यदि इस विषय पर उच्च स्तर पर गंभीर और ठोस कार्रवाई नहीं की गई, तो हिंदी केवल संवैधानिक शब्द बनकर रह जाएगी, व्यवहारिक भाषा नहीं। सरकार को चाहिए कि वह केवल योजनाएँ और दिखावे पर न रुके, बल्कि हिंदी को सचमुच प्रशासनिक जीवन का हिस्सा बनाए, तभी राजभाषा हिंदी का सपना साकार हो सकेगा।



रिश्ते

- मुहम्मद जियाऊल हक
सहायक निदेशक (राजभाषा)



रिश्ते काँच की तरह होते हैं,
टूट जाए तो चुभते हैं,
इन्हे संभालकर हथेली पर सजाना,
क्योंकि इन्हें टूटने में एक पल,
और बनाने में वर्षों लग जाते हैं।

इस शहर में हमारा कौन हैं,
हर कोई अपनों से बेगाना क्यों हैं,
सब तरफ फैली मायूसी, बेबसी और तन्हाई,
यहाँ दिल का सहारा कौन हैं।

कोशिश कीजिए कि कोई आपसे ना रुठे,
जिंदगी में अपनों का साथ ना छूटे,
रिश्ता चाहे कोई भी हो उसे ऐसा निभाओ कि,
उस रिश्ते की डोर जिंदगी भर ना टूटे।

रिश्ते हमेशा तितली जैसी होती हैं,
जोर से पकड़ो तो मर जाते हैं,
छोड़ दो तो उड़ जाते हैं,
अगर प्यार से पकड़ो तो,
अपना रंग छोड़ जाते हैं।

एक प्यारा सा दिल जो कभी नफरत नहीं करता,
एक मुस्कुराहट जो फीकी नहीं पड़ती,
एक एहसास जो कभी दुःख नहीं देता,
एक रिश्ता जो कभी खत्म नहीं होता।

जिंदगी छोटी नहीं होती
बस हमारी ख्वाहिशें बढ़ जाती हैं,
उसी तरह कोई बुरा नहीं होता,
बस हमारी सोच बदल जाती है।



दिल्ली की गलियों से उत्तर-पूर्व की वादियों तक का सफर

- श्री पीयूष हलदर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अक्टूबर 2022 में मेरी ज़िंदगी ने एक ऐसा मोड़ लिया जिसकी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी। मेरी पोस्टिंग मेघालय में हुई और मैं पहली बार दिल्ली के बाहर निकला - उस शहर से जिसे मैंने 27 वर्षों तक कभी नहीं छोड़ा था। एक ऐसा लड़का जो कभी अपने घर से दूर नहीं गया था, वह अब एक नई, अनजानी और हरी-भरी दुनिया में आ गया था। जो यात्रा एक नौकरी के सिलसिले में शुरू हुई थी, वह मेरे जीवन की सबसे गहरी और आत्म-परिवर्तनकारी यात्रा बन गई।

दिल्ली में पले-बढ़े इंसान के लिए जीवन हमेशा तेज़ रफ्तार, भीड़-भाड़ और शोरगुल से भरा रहा। घर की सुविधा और शहर की भागदौड़ मेरी पहचान बन चुकी थी। लेकिन मेघालय में कदम रखते ही मुझे ऐसा लगा जैसे किसी नए जीवन के द्वार खुल गए हों - एक ऐसा जीवन जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। यहां की शुद्ध हवा, हरियाली से भरे पहाड़ और शांत वातावरण ने मुझे जैसे थाम लिया।

मेघालय में बिताया गया समय मेरे लिए किसी जादू से कम नहीं रहा। यहां की प्रकृति अद्भुत और अतुलनीय है। मैंने नॉग्रिआत का प्रसिद्ध डबल डेकर लिविंग रूट ब्रिज देखा - प्रकृति और मानव की मिलीजुली कारीगरी का अद्भुत उदाहरण। डॉकी में बिलकुल साफ पानी में तैरने का अनुभव ऐसा था जैसे मैं हवा में तैर रहा हूँ। अनगिनत झरनों की गर्जना, जंगलों में कैंपिंग और पहाड़ी रास्तों पर की गई ट्रेकिंग

ने मुझे बाहर ही नहीं, अंदर से भी मजबूत बना दिया।

लेकिन इन सब अनुभवों से बढ़कर, मेघालय ने मेरी आत्मा को छुआ है। घर से दूर रहकर मैंने खुद की देखभाल करना सीखा, खुद फैसले लेना सीखा और आत्मनिर्भर बनना सीखा। मैंने नए लोगों से मिला, अलग-अलग संस्कृतियों को जाना और जीवन के नए रूपों को महसूस किया। यहां की शांति ने मुझे भीतर झाँकने का समय दिया और उस शांति में मैंने खुद को पाया।

मेघालय ने मुझे विनम्र होना सिखाया। यहां की प्रकृति सिर्फ खूबसूरत नहीं है, वह आपको आदर करना भी सिखाती है। बरसात की तेज़ बौछारें आपको आपकी नाजुकता का एहसास कराती हैं, और पहाड़ों के बीच उगता सूरज आपको कृतज्ञता से भर देता है। यहां का हर पल सादगी और संतोष का पाठ पढ़ाता है।

आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो यह कह सकता हूँ कि मेघालय आना मेरे जीवन के सबसे बेहतरीन फैसलों में से एक था। इसने सिर्फ मेरा पता नहीं बदला, मेरी सोच और पहचान को भी नया रूप दिया। मैंने यहां वो इंसान पाया, जो शायद दिल्ली की भीड़ में कहीं खो गया था।

आज मैं सिर्फ एक दिल्ली का लड़का नहीं हूँ - मैं वो इंसान हूँ जिसे इन वादियों, नदियों और झरनों ने नया रूप दिया है। मेघालय ने मुझे यादें नहीं, एक नया जीवन दिया है और इसके लिए मैं, हमेशा आभारी रहूँगा।

मेघालय की जीवंत धरती : एक हरे स्वर्ग की कहानी

- श्री जितिन कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

बहुत दूर, पूरब की पहाड़ियों में बसा है एक छोटा-सा स्वर्ग मेघालय, जिसका अर्थ ही है “बादलों का घर”। यह धरती सिर्फ बादलों से ही नहीं, बल्कि अद्भुत जीव-जंतुओं, रंग-बिरंगे फूलों, दुर्लभ पेड़ों और रहस्यमयी वनस्पतियों से भी सजी हुई है। मेघालय की जैव विविधता इतनी अनमोल है कि यहाँ लगभग 3,128 से अधिक पौधों की प्रजातियाँ, 660 से अधिक पक्षी, 200 से ज्यादा ऑर्किड प्रजातियाँ और 200 से अधिक स्थानिक कीट और तितलियाँ पाई जाती हैं। यही नहीं, कई ऐसे जीव-जन्तु और पौधे हैं जो सिर्फ मेघालय में ही पाए जाते हैं और दुनिया के किसी और कोने में नहीं।

पेड़ - पेड़ों की बात करें तो मेघालय की गहरी वादियों और पहाड़ियों में 1200 से अधिक प्रकार के वृक्ष हैं। इनमें से कुछ खास पेड़ हैं, जैसे - पिचकर (Pinus kesiya) - जिसे खासी में Tiew-Iakyrdop कहा जाता है। इसका उपयोग घर बनाने, जलाने और औषधीय तेल निकालने में होता है। होलॉंग (Dipterocarpus retusus) - यह एक दुर्लभ और बहुमूल्य लकड़ी वाला वृक्ष है, जो गारो हिल्स में अधिकतर पाया जाता है। लिविंग रूट ब्रिज बनाने वाले इंडियन रबर ट्री (Ficus elastica) - ये पेड़ नदियों के पार जीवित पुल बनाने के लिए प्रयोग होते हैं, जो आज भी स्थानीय खासी जनजातियों की शान हैं।

फूलों की रानी - ऑर्किड - क्या आप जानते हैं कि मेघालय को भारत की ऑर्किड राजधानी भी कहा जाता है ? यहाँ के जंगलों में 300 से अधिक ऑ

र्किड की प्रजातियाँ मिलती हैं, जिनमें से कई जैसे कि Paphiopedilum insigne और Dendrobium nobile केवल यहीं देखने को मिलती हैं। ये फूल ना सिर्फ दिखने में सुंदर होते हैं, बल्कि कुछ में त्वचा रोगों और सर्दी-जुकाम को ठीक करने की औषधीय शक्ति भी होती है।

पक्षियों की चहचहाहट - मेघालय के घने जंगलों में गूँजती है। हॉर्नबिल, ब्लू थ्रश, स्कालेट मिनिवेट जैसे रंग-बिरंगे पक्षियों की आवाजें। हिल मैना यहाँ की सबसे प्रसिद्ध पक्षी है, जो इंसानों की आवाज़ की नकल तक कर सकती है।

छोटे कीड़े, बड़ी भूमिका - यहाँ के जंगलों में रहने वाले लूसिफर जुगनु (Firefly luciola), राजा तितली (Kaiser-i-Hind) और अनेक मधुमक्खियाँ पारिस्थितिकी तंत्र को जीवंत बनाते हैं। वे परागण (pollination) में मदद करते हैं और फसलों के लिए अमूल्य होते हैं।

वन्य जीवों की विविधता - क्लाउडेड लेपर्ड, रेड पांडा और मालायन जाइंट स्क्विरल जैसे जीव यहाँ की पहाड़ियों में शांति से रहते हैं। ये सभी जीव मेघालय के विशिष्ट वातावरण और आदिवासी संरक्षण संस्कृति की निशानी हैं।

समाप्ति: प्रकृति की पुकार - मेघालय सिर्फ एक राज्य नहीं, बल्कि जीवित संग्रहालय है, जहाँ हर पेड़, हर पत्ती, हर चिड़िया एक कहानी कहती है। यह कहानी हमें सिखाती है कि प्रकृति के साथ तालमेल से जीना ही सच्चा विकास है।

गाँव की जिंदगी

- श्री संदीपन चौधरी
सहायक पर्यवेक्षक

हर सुबह सूरज की पहली किरण के साथ गाँव जाग उठता है।
मिट्टी की खुशबू, खेतों की हरियाली और पक्षियों की चहचहाहट मिलकर एक सुंदर गीत बनाते हैं।
गाँव का जीवन सरल होता है, पर उसमें आत्मा होती है।
बच्चे बिना चिंता के कच्ची सड़कों पर दौड़ते हैं, हँसी बिखेरते हैं।

किसान अपने हल-बैल लेकर खेतों की ओर निकल पड़ते हैं।
गौशाला में गायेँ रंभाती हैं और दादी चूल्हे पर रोटियाँ सेंकती हैं।
दोपहर को आम के पेड़ के नीचे खटिया बिछ जाती है जहाँ सब मिल बैठते हैं।
कभी ताश का खेल, कभी पुरानी कहानियाँ गाँव की गर्मी भी मीठी लगती है।

तालाब के किनारे बच्चे नहाते हैं और महिलाएँ कपड़े धोती हैं, हँसी-ठिठोली करती हैं।
हर शाम मंदिर की घंटियाँ गूँजती हैं और शांति चारों ओर फैल जाती है।
गाँव का चौपाल सबका अड्डा होता है जहाँ हर समस्या पर चर्चा होती है।
बूढ़े-बुजुर्ग अपनी यादें सुनाते हैं और युवा नए सपने बुनते हैं।

रात को जब पूरा गाँव चाँदनी में नहाता है, तब तारे बहुत पास लगते हैं।
कभी-कभी बिजली नहीं होती, पर लालटेन की रौशनी में भी दिल रोशन रहता है।
हर त्योहार मिलजुल कर मनाया जाता है, जैसे एक बड़ा परिवार।
गाँव में रिश्ते गहरे होते हैं हर चेहरा परिचित, हर मन अपनापन से भरा।

शहर की चकाचौंध से दूर, ये जिंदगी भले साधारण हो पर सच्ची होती है।
यहाँ समय धीमा चलता है, पर हर पल में एक कहानी होती है।
गाँव की धूल भी सोना लगती है, जब उसमें मेहनत की चमक होती है।
यही है गाँव, जहाँ दिल बसता है और जीवन मुस्कुराता है।



- श्रीमती रोज बेगम
माँ - मुहम्मद जियाउल हक
सहायक निदेशक (राजभाषा)

पुत्रवधू अपने मायके जाने का कोई भी अवसर चूकती नहीं। अपने शोहर के बाहर जाने पर स्वयं भी तैयार हो जाती और शोहर को वाध्य कर देती कि वह उसे उसके मायके छोड़ते हुए बाहर जाये। ऐसा मुझे प्रतीत होता है।

मुझे इस बात का भी आश्चर्य होता है कि ऐसा करने पर पुत्रवधू के माता-पिता भी उसको कोई सीख नहीं देते कि बेटी, ससुराल ही अब तुम्हारा असली घर है, तुम्हारी वृद्ध सास-ससुर भी अस्वस्थ-रहते हैं और घर में अकेली भी, उनकी सेवा करना, उनके खान-पान और दवा-गोली का ध्यान रखना तुम्हारा फर्ज है।

ऐसे में जब मेरे मन में क्षोभ पैदा होने लगता है तो मैं, स्वयं ही रसोई में पड़े झूठे वर्तनों को धोकर, खाना बनाकर और शोहर को खाना खिलाने के बाद एवं दवा आदि देने के पश्चात स्वयं आहार उपभोग करती, पर कभी-कभी मन में बहुत क्षोभ होने लगती - क्या इसी दिन के लिए ईश्वर से मित्रता की जाती हैं सन्तान प्राप्ति हेतु। ऐसी गैर जिम्मेदार पुत्रवधू क्या मेरे ही भाग्य में लिखी थी।

एक दिन शाम को पता लगा कि कल बेटा का दफ्तर की छुट्टी है। मैंने, मन ही मन सोचा कि अब कल दोनों ही सुबह आठ बजे से पहले बिस्तर नहीं छोड़ेंगे लेकिन दूसरे दिन सुबह के पाँच बजे ही बहू-बेटे को नहा-धोकर तैयार होते देख तो मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने बेटा से पूछा - आज कहीं जाना है क्या ?

“हाँ, दिल्ली जाना है।”

“और इसको, बहू को भी जाना है ?”

“हाँ” - पुत्र ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

“फिर इस बच्चे को साथ ले जा रहे हो या यही छोड़ कर जाओगे ?” - नन्हे से नाती की ओर देखते हुए मैंने पूछा -

“इसे इसकी नानी के पास छोड़ते हुए जाओगे ?”

सुनकर मन तो बहुत कसमसाया पर मैं, अपने क्रोध को अन्दर ही अन्दर पी गयी, जाते समय सुबह सुबह क्यों क्लेश की जाय।

शाम को जब वे लौटकर आये तो रात हो चुकी थी दोनों के हाथों में सामान से भरे दो थैले लटक रहे थे जैसे शापिंग करके आ रहे हों। आते ही बहू ने थैले से एक स्लीपिंग सूट निकाला और नन्हे बच्चे को कालीन पर लिटाकर उसे पहनाने लगी। मोजा, पाजामा और शर्ट तीनों को मिलाकर बनाये गये सिंगल पीस में बच्चे को घुसाकर बहू ने उसकी चैन खींच दी और बच्चे को उठाकर खड़ा कर दिया। सूट इतना टाइट था कि बच्चा खड़ा हो-हो कर गिर रहा था और ठीक से चार कदम भी नहीं चल पा रहा था।

उसे देखकर मेरा अन्दर ही अन्दर सुबह से रुका हुआ क्रोध भड़क उठा और मैंने झुंझलाते हुए कहा - बहू, ये सूट बहुत छोटा है।

“नहीं माँजी ये नाइट सूट है, ये तो ऐसे ही होते हैं” - बहू की बात सुनकर मेरा क्रोध बाहर प्रकट हो गया और मैंने गुस्सा से उसे बच्चे के शरीर से उतार कर फेंक दिया - “हाँ, मैं, तो कुछ जानती ही नहीं हूँ कि नाइट सूट कैसे होते हैं। इतनी उम्र वैसे ही गुजार दी, मैंने तो बस, तुम लोग ही सब कुछ पेट से सीख कर आये हो।

सुनकर बहूँ सहम सी गई और फिर कुछ नहीं बोली, दूसरे दिन मुझे शान्त अवस्था में देख कर बहू ने मुझे अपनी सास को और अपने देवर को अपने पास बुलाया और कल शापिंग करके लाये थैलों में से सभी के कपड़े निकाल-निकाल कर दिखाने लगी - “माँ जी देखिए ये साड़ी आपके लिए कैसा है, भैया देखो ये तुम्हारे लिए जींस कैसी है, पापाजी ये आपके लिए कुर्ता-पाजामा।

हम तीनों के कपड़े दिखाते-दिखाते उसके हाथ में पकड़े कल वाले दोनों थैले खाली हो गये तो मैंने आश्चर्य से पूछा - अरे ! तुम अपने शोहर व स्वयं के लिए कुछ भी नहीं लाई बहू ?

“नहीं पापाजी अभी हम लोगों के पास तो ढेर सारे कपड़े आदि हैं। आप लोगों के लिए ये सब लाने के लिए काफी समय से सोच रही थी लेकिन समय ही नहीं मिल पा रहा था अब कल थोड़ा सा समय मिला तो चले गये थे हम लोग।

सुनकर अवाक् रह गया मैं, हमारी बहूँ हम सबका इतना ध्यान रखती है और हम लोग अब तक उसे समझ ही नहीं पाये थे। अब मुझे अपने कल किए गये क्रोध पर पछतावा होने लगी थी।



भूख - गरीबी की उपहार



- श्री नीरज कुमार गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भूख, गरीबी की उपहार है,
प्रतिक्षण ढूँढ़ती तनिक आहार है,
तड़पन मानो मौलिक अधिकार है,
क्या बताऊँ साहब ये तो जीवन का संहार है।

अपनो की मजबूरियों को बाँटती है,
शर्मनाक सा जीवन काटती है,
अपशब्दों को रूह से साटती है,
क्या बताऊँ साहब पत्तों की जुठन भी चाटती है।

बेरंग ये रंग है, बस उमंग ही संग है,
भूखा सा अंग है, मर्यादा भी तंग है,
खुशहाल भरी जीवन के रंग में भंग है,
क्या बताऊँ साहब ये पेट की जंग है।

उलझन में छिपी नूर है, उजड़ती सिंदूर है,
हकीकत से चूर है, तड़प ये बड़ी क्रूर है,
शुक्र है हम इस त्रासदी से दूर है,
क्या बताऊँ साहब ये कलयुगी अशुर है।

तसल्ली फिजूल है, नियति कबूल है,
कर्मों का वसूल है, स्थिति मकबूल है,
गरीबी का उसूल है, दुख से लदी बबूल है,
क्या बताऊँ साहब इनकी उम्मीद बस रसूल है।

जिंदगी की कीमत

- सुश्री शुभोनिता दास
बेटी - श्री सहदेव दास
एम.टी.एस.



एक बार एक छोटे से बच्चे ने अपने पापा से पूछा, पापा - मेरी जीवन की क्या कीमत है ? तब उसके पापा ने कहा - अगर तुम सच में अपने जिंदगी की कीमत समझना चाहते हो, तो मैं, तुम्हें एक पत्थर देता हूँ। इस पत्थर को लेकर बाजार में चले जाना और अगर कोई इसकी कीमत पूछे तो तुम कुछ मत कहना, बस अपनी दो उँगली खड़ी कर देना। कुछ समय बाद, एक बूढ़ी औरत उसके पास आई। वह बूढ़ी औरत उस पत्थर की कीमत पूछने लगी। लड़का एकदम चुप रहा। उसने कुछ नहीं कहा और अपनी दो उँगलियाँ खड़ी कर दी तभी वे बूढ़ी औरत बोली, “200 रुपए, ठीक है। इस पत्थर को मैं, तुमसे खरीद लुंगी”। बच्चा हैरान हो गया और सोचने लगा, एक पत्थर की कीमत 200 रुपए। पत्थर तो कहीं पर भी मिल जाते हैं। लेकिन यह बूढ़ी औरत इस पत्थर के लिए 200 रुपए देने वाली है।

वह बच्चा तुरंत अपने पापा के पास गया और बोला, पापा मुझे बाजार में एक बूढ़ी औरत मिली थी और वह इस पत्थर के 200 रुपए देने के लिए तैयार थी। उसके पापा ने कहा, “इस बार तुम इस पत्थर को म्यूसियम में लेकर जाना और कोई इसकी कीमत पूछे तो कुछ मत कहना। फिर से अपनी दो उँगली खड़ी कर देना। वह बच्चा म्यूसियम में गया। वहाँ एक आदमी की नजर उसके हाथ में रखे पत्थर पर पड़ी। उस आदमी ने पत्थर की कीमत पूछी। बच्चा एकदम चुप रहा और अपनी दोनों उँगलियाँ खड़ी कर दी। आदमी ने कहा, 20,000 रुपए, ठीक है! मैं तुम्हें इस पत्थर के 20,000 रुपए देने के लिए तैयार हूँ। यह पत्थर तुम मुझे दे दो। बच्चा फिर से चौंक गया और जाकर अपने पापा से

कहा, पापा मुझे म्यूसियम में एक आदमी मिला था और वह आदमी इस पत्थर के 20,000 रुपए देने के लिए तैयार थे। तब उसके पापा ने कहा, “अब मैं तुम्हें एक आखरी जगह भेजने जा रहा हूँ। तुम्हें जाना है, कीमती पत्थरों के दुकान पर तथा अगर वहाँ पर भी कोई इसकी कीमत पूछे तो अपनी दो उँगली खड़ी कर देना”। वह बच्चा एक कीमती पत्थरों के दुकान पर गया। वहाँ उसने एक बड़े आदमी को देखा जो दुकान के बहार खड़ा था। जैसे ही उस बड़े आदमी की नजर उस पत्थर पर पड़ी वह हैरान रह गया। वह आदमी बच्चे के पास आया और पत्थर को हाथ में लेकर कहा, इस पत्थर की तलाश में मैंने अपनी जिंदगी गुजार दी। कहाँ से मिला तुम्हें यह पत्थर ? क्या कीमत है इस पत्थर की ? कितना लौंगे तुम इस पत्थर के लिए ? बच्चा चुप रहा और अपनी दो उँगलियाँ खड़ी कर दी। तभी वह बूढ़ा आदमी बोला, कितना 2 लाख रुपए। ठीक है। मैं इसके लिए तुम्हें 2 लाख रुपए देने के लिए तैयार हूँ। प्लीज तुम यह पत्थर मुझे दे दो। उस बच्चे को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह बच्चा तुरंत अपने पापा के पास पहुंचा और बोला, पापा एक बूढ़ा आदमी इस पत्थर के 2 लाख रुपए देने के लिए तैयार है। उसके पापा ने कहा - क्या अब तुम समझ गए अपनी जीवन की कीमत ? अपनी जीवन की कीमत इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने आप को कहाँ रखते हैं। यह आपको फैसला करना है की आपको 200 रुपए का पत्थर बनना है या फिर 2 लाख रुपए का। यह आपके ऊपर निर्भर करता है कि आपकी जीवन की कीमत क्या होगी।

हॉर्नबिल महोत्सव: नागालैंड की संस्कृति की आत्मा से साक्षात्कार

- श्रीमती सुभ्रा हलदर

माँ - श्री पीयूष हलदर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कहते हैं कि यात्रा जीवन को नए आयाम देती है और मैंने इसे खुद महसूस किया जब मैं अपने बेटे पीयूष के साथ नागालैंड के हॉर्नबिल महोत्सव में शामिल हुआ। यह अद्भुत आयोजन भारत का सबसे बड़ा सांस्कृतिक उत्सव है, जिसे त्योहारों का त्योहार भी कहा जाता है। इसमें नागालैंड की सभी जनजातियाँ भाग लेती हैं और अपनी परंपराओं, संस्कृति और जीवनशैली को पूरे गर्व से प्रस्तुत करती हैं। मेरे लिए यह केवल एक महोत्सव नहीं, बल्कि एक अविस्मरणीय सांस्कृतिक यात्रा थी - पूर्वोत्तर भारत के हृदय और उसकी आत्मा से जुड़ने का अवसर। मेरी यात्रा की शुरुआत मेघालय के शिलांग से हुई, जहाँ मेरा बेटा वर्तमान में कार्यरत है। वहाँ से हम टैक्सी से गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पहुँचे, फिर ट्रेन से दीमापुर तक का सफर तय किया। दीमापुर से हमने एक टैक्सी ली और नागालैंड की राजधानी कोहिमा के पास स्थित किसामा हेरिटेज विलेज की ओर रवाना हो गए, जहाँ हॉर्नबिल महोत्सव का आयोजन होता है। रास्ते में पहाड़ियों का सौंदर्य, बादलों का सड़कों को छूना और हर मोड़ पर हरियाली का गहराना - ये सब आने वाले भव्य अनुभव की झलक दे रहे थे। कॉलेज के दिनों में मैंने पढ़ा था कि यह महोत्सव हर साल 1 दिसंबर से 10 दिसंबर तक आयोजित होता है लेकिन कभी सोचा नहीं था कि इसे एक दिन अपनी आँखों से देख पाऊँगा पर आज यह संभव हुआ - अपने बेटे की वजह से और इसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ।

किसामा पहुँचते ही वहाँ का वातावरण मंत्रमुग्ध कर देने वाला था। हर जनजाति की अपनी पारंपरिक

झोपड़ी जिसे मोरुंग कहते हैं। यह बांस और लकड़ी से बनी होती है जिसमें उनके पारंपरिक प्रतीक, शस्त्र और दैनिक जीवन की वस्तुएँ सजाई जाती हैं। एक झोपड़ी से दूसरी झोपड़ी तक जाना ऐसा लग रहा था जैसे किसी सांस्कृतिक समय यात्रा पर निकले हों। जनजातियों के पारंपरिक परिधान, रंग-बिरंगे पंखों वाले हेडगियर मन को और पशु दाँतों से बने गहने और सुंदर डिजाइनों वाली शॉलें देखकर मैं अभिभूत हो गया। ढोल की थाप, लोक गीत, युद्ध नृत्य और कथा वाचन, सब कुछ आत्मा को छू लेने वाला था। नगा युद्ध नृत्य विशेष रूप से आकर्षक था - साहस, एकता और संस्कृति की भावना से भरपूर। वहीं, भोजन भी उतना ही अद्भुत अनुभव रहा। हर जनजाति ने अपनी विशिष्ट पारंपरिक व्यंजन परोसे जैसे - बांस, स्मोक्ड मीट, जड़ी-बूटियों और पारंपरिक मसालों से बने पकवान जो मेरे लिए नए थे लेकिन स्वाद में बेमिसाल। परन्तु इन सबके बीच जो सबसे गहराई से छू गया, वह था वहाँ के लोगों का अपनापन और अपनी संस्कृति के प्रति गर्व। उनका आतिथ्य, अपनी परंपराओं को साझा करने की खुशी और जड़ों से जुड़ाव ने इस महोत्सव को केवल देखने का नहीं, बल्कि महसूस करने का अनुभव बना दिया।

यह यात्रा और वह भी अपने बेटे के साथ हमेशा मेरी यादों में अमूल्य बनी रहेगी। हॉर्नबिल महोत्सव ने मुझे भारत की सांस्कृतिक विविधता की गहराई और पूर्वोत्तर की समृद्ध विरासत से परिचित कराया। निस्संदेह, यह मेरे जीवन की सबसे सुंदर और आत्मिक यात्राओं में से एक रही।

कॉलेज के रंग, यादों के संग



- श्री अमित कुमार वर्मन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कॉलेज की दुनिया, कुछ खास होती है,
हर सुबह की चाय, सौ बातों की शुरुआत होती है।

क्लास का घंटा, पर हम लेट आते हैं,
प्रोफेसर देखते हैं और हम मुस्कराते हैं।

लैब की रिपोर्ट, हम रात में बनाते हैं,
और प्रेजेंटेशन में, गूगल से काम चलाते हैं।

कैंटीन की मैगी, वो फ्रेंड्स के साथ शेयर,
बिना पैसों के भी, होती थी वहां बहुत केयर।

बर्थडे में फेस पे केक और सरप्राइज़ धमाके,
छोटे से कमरे में, होते थे बड़े तमाशे।

इम्तिहान की रातें, चाय और किताबों की बात,
यार पढ़ा कुछ नहीं, फिर भी पास होने की बात।

कभी लड़ाई, कभी गले लग जाना,
कॉलेज लाइफ में ही आता है असली दोस्ती का जमाना।

वो आखिरी दिन, वो विदाई की शाम,
आँखें नम, पर दिल में हजारों अरमान।

कॉलेज की यादें, हर पल साथ रहेंगी,
जिंदगी की भीड़ में, हमेशा मुस्कान देंगी।

गुवाहाटी महानगर

- श्रीमती शाहनाज बेगम
बहन - मुहम्मद जियाऊल हक,
सहायक निदेशक (राजभाषा)



गुवाहाटी पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा महानगर है। इसको असम का सिंहद्वार भी कहा जाता है। यह महानगर प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध तीर्थ स्थान के रूप में विख्यात है। यह शहर चारों ओर पहाड़ों से आवृत है। इसका सौन्दर्य देखने वाले का मन मोहित कर देता है। सचमुच गुवाहाटी शहर की रमणीयता अनुपम है।

दिसपुर कामरूप जिले का सदर तथा असम की राजधानी है। गुवाहाटी शहर नारंगी से लेकर बोरझार

में स्थित लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा तक फैला हुआ है। इसके दक्षिण में वशिष्ठाश्रम है। ब्रह्मपुत्र नद के दोनों तरफ यह शहर फैला हुआ है।

इतिहास प्रसिद्ध यह शहर पुराने जमाने में कामरूप राज्य की राजधानी थी। प्राचीन काल में इसका नाम प्रागज्योतिषपुर था। प्राचीन कामरूप राज्य को महाप्रतापी नरपति नरकासुर, भगदत्त, भास्कर वर्मा इत्यादि ने उक्त राज्य को विकसित एवं सम्पन्न

बनाया था। असम की कला, साहित्य-संस्कृति और सभ्यता इसी जगह से चारों ओर फैली थी। कामरूप के इतिहास के अनुसार यह ज्योतिष-विद्या का भी केन्द्र स्थान था। इसी कारण गुवाहाटी नगर का नाम पड़ा प्रागज्योतिषपुर।

गुवाहाटी महानगर असम का प्रमुख शिक्षा केन्द्र है। सन् 1948 में जालुकबारी में “गौहाटी विश्वविद्यालय” की स्थापना हुई। इसके समीप ही गुवाहाटी इंजीनियरिंग महाविद्यालय भी है। इससे पूर्व कॉटन महाविद्यालय ही असम की एक मात्र उच्च शिक्षा की संस्था थी, जिसकी स्थापना सन् 1901 में हुई थी। परन्तु आज कई विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, पशुचिकित्सा महाविद्यालय, आयुर्वेदिक महाविद्यालय, चिकित्सा महाविद्यालय इत्यादि से सम्पन्न है। असम के साथ-साथ मिजोरम, मणिपुर, त्रिपुरा, नागालैण्ड और अरुणाचल में राष्ट्रभाषा प्रचार करने वाली प्रतिष्ठित संस्था असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का सदर कार्यालय यही स्थित है। समिति द्वारा संचालित गुवाहाटी हिन्दी विद्यापीठ राष्ट्रभाषा शिक्षार्थियों की एक महत्वपूर्ण संस्था है।

स्वाधीनता के बाद यह शहर वाणिज्य प्रधान हो उठा है। यहाँ तरह-तरह के घरेलू उद्योग-धन्धे के अलावा भी नूनमाटी में असम का दूसरा तेल शोधनागार बना है। यहाँ का चिड़ियाघर देखने लायक है। इसमें तरह-तरह के जानवर और पक्षी हैं। चान्दमारी में असम का प्रमुख अनातार केन्द्र है, उजानबाजार में जहाज घाट है और पाण्डु में ब्रह्मपुत्र का एक बन्दरगाह भी बना है। इससे वाणिज्य व्यापार अच्छी तरह चल सकता है। असम की यातायात-व्यवस्था के उन्नति-साधन के लिए ब्रह्मपुत्र पर पुल बनाया गया है। इस पुल के निर्माण से असम के मार्ग शेष भारत के साथ संयुक्त हो गए हैं। इससे शहर का सौन्दर्य भी बढ़ा है। इसी के पास मालीगाँव में पूर्वोत्तर सीमा रेलवे का

प्रधान कार्यालय है। असम में गुवाहाटी रेलवे स्टेशन सबसे बड़ा है। यहाँ से सभी जगह आवागमन किया जा सकता है। साथ ही नगर की जनसंख्या भी तेजी से बढ़ रही है। आजकल इस महानगर की जनसंख्या तकरीबन 14,05,000 है।

पर्वत-मैदान, नद-नदी का संगम-स्थल होने के कारण गुवाहाटी महानगर प्राचीन काल से ही प्राकृतिक सौन्दर्य का तीर्थ स्थान बना हुआ है। महानगर के शीर्षस्थल पर इतिहास प्रसिद्ध नीलांचल पहाड़ पर कामाख्या और भुवनेश्वरी ब्रह्मपुत्र नद का पावनता के प्रतीक है वहीं उत्तर गुवाहाटी में हाजो स्थित पुवा मक्का है, जो विविध सम्प्रदायों को एक धागा में पिरोये रखने में कायम हैं।

गुवाहाटी महानगर में बहुत सी इतिहास प्रसिद्ध वस्तुएँ हैं, जो असम संग्रहालय में संरक्षित हैं। इतिहास प्रसिद्ध दीघली पुखुरी के दक्षिणी ओर प्रसिद्ध जिला पुस्तकालय है। इसके पश्चिम किनारे पर हैन्दिक (सन्दिक्) महिला महाविद्यालय है तथा उत्तर की ओर गुवाहाटी उच्च न्यायालय अवस्थित है। इतिहास प्रसिद्ध इस बड़े तालाब ने महानगर के गौरव तथा सुषमा की वृद्धि में विशेष सहयोग दी है।

गुवाहाटी में फेंसी (फाँसी) बाजार, पान बाजार, उजान बाजार, पलटन बाजार, लाखटकिया बाजार इत्यादि प्रमुख बाजार हैं। इनमें से पलटन बाजार तथा फेंसी (फाँसी) बाजार असम का सबसे अहम व प्रमुख वाणिज्य केन्द्र है। इसके अलावा सड़कों की दशा भी अब पहले से बेहतर हैं। आज भारतवर्ष के दूसरे प्रसिद्ध नगरों से इसकी महत्ता किसी तरह से कम नहीं है। वैज्ञानिक ढंग से और अधिक विकास हो जाने पर गुवाहाटी महानगर हमारे देश के अन्य प्रमुख महानगरों के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ने में समर्थ होगा।



डॉ. फिल्मेका मारबनियांग, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेह्रू), मेघालय, शिलांग को हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर गुलदस्ता भेंट करते हुए एवं खासी शौल ओढ़ाते हुए श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री मैथ्यूस मैथ्यू उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए।

मुख्य अतिथि सहित प्रधान महालेखाकार (ले.प.) और प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.), हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) मेघालय, शिलांग के वार्षिक पत्रिका क्रमशः “पूर्वाशा” एवं “नवीन पूर्वाचल संदेश” के लोकार्पण की एक झलक।



हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण कार्यक्रम का आनंद लेते हुए।



डॉ. फिल्मेका मारबनियांग, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेहू), मेघालय, शिलांग, हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर सभा में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करती हुई।



श्री कैल्विन हैरिस खारशिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग, हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर वक्तव्य देते हुए।



मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर अभिभाषण देते हुए।



हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करती हुई कर्मचारी की बच्ची।



हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करती हुई कर्मचारी की बच्ची।



श्री संतोष कुमार तिवारी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर कविता पाठ करते हुए।



डॉ. फिल्मेका मारबनियांग, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेहू), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर विभागीय राजभाषा रनिंग शील्ड प्राप्त करती हुई श्रीमती एस.एस.डी. सिएम, व.ले.प.अ., ए.एम.जी.-II अनुभाग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करती हुई श्रीमती माधवी देब, वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग।



श्री कैल्विन एच. खारशिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री कैल्विन एच. खारशिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के अधिकारी एवं कर्मचारी।



श्री मैथ्यूस मैथ्यू, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करती हुई सुश्री प्रार्थना सोनार।



श्री रातुल चन्द्र बरा, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग, हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए।



हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के उपरांत मुख्य अतिथि सहित कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान के समूह अधिकारियों सहित हिन्दी स्टाफ की सामूहिक छायाचित्र की एक झलक।



उपाध्यक्ष, नराकास, महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग के करकमलों द्वारा वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में प्रशंसनीय कार्य करने के फलस्वरूप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलांग की राजभाषा शील्ड योजना के तहत दिनांक 23/06/2025 को आयोजित नराकास की प्रथम अर्द्धवार्षिक बैठक में प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्रीमती धनलक्ष्मी चौरसिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग में दिनांक 23/06/2025 को आयोजित नराकास की प्रथम अर्द्धवार्षिक बैठक में प्रतिभाग लेते हुए सदस्य कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा) दिनांक 14/09/2024 और 15/09/2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हिंदी दिवस समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभाग लेते हुए।



मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा), दिनांक 14/09/2024 और 15/09/2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हिंदी दिवस समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभाग लेने के फलस्वरूप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सहभागिता प्रमाण-पत्र जारी करने की एक झलक।



दिनांक 05/03/2025 को सोनापुर, गुवाहाटी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर असम के मुख्य मंत्री, डॉ. हिमन्त विश्व शर्मा के करकमलों द्वारा शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करने की एक झलक।



मुहम्मद जियाउल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा) दिनांक 05/03/2025 को सोनापुर, गुवाहाटी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभाग लेते हुए।



मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा) दिनांक 26/06/2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह में प्रतिभाग लेते हुए।



मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा), दिनांक 26/06/2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह में प्रतिभाग लेने के फलस्वरूप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सहभागिता प्रमाण-पत्र जारी करने की एक झलक।



दिनांक 11/07/2025 को जी.एम.सी. बालयोगी इंडोर स्टेडियम, गच्चीबावली, हैदराबाद में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री, श्री जी. किशन रेड्डी को गुलदस्ता भेंट करती हुई श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय।



दिनांक 11/07/2025 को जी.एम.सी. बालयोगी इंडोर स्टेडियम, गच्चीबावली, हैदराबाद में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री, श्री जी. किशन रेड्डी, श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, डॉ. (श्रीमती) मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव इत्यादि मंच पर राष्ट्रगान गायन की एक झलक।



दिनांक 11/07/2025 को जी.एम.सी. बालयोगी इंडोर स्टेडियम, गच्चीबावली, हैदराबाद में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी, श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, डॉ. (श्रीमती) मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव इत्यादि द्वारा पुस्तक विमोचन की एक झलक।



मुहम्मद जियाउल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा) दिनांक 11/07/2025 को जी.एम.सी. बालयोगी इंडोर स्टेडियम, गच्चीबावली, हैदराबाद में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर प्रतिभाग लेते हुए।



मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा) दिनांक 11/07/2025 को जी.एम.सी. बालयोगी इंडोर स्टेडियम, गच्चीबावली, हैदराबाद में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर प्रतिभाग लेते हुए।



श्री जितिन कुमार, कनिष्ठ अनुवादक दिनांक 11/07/2025 को जी.एम.सी. बालयोगी इंडोर स्टेडियम, गच्चीबावली, हैदराबाद में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर प्रतिभाग लेते हुए।



श्रीमती धनलक्ष्मी चौरसिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, दिनांक 18/06/2025 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर स्वागत भाषण देती हुई।



प्रोफेसर पार्थ सारथी पाण्डेय, क्षेत्रीय निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, शिलांग एवं संकाय विशेषण द्वारा दिनांक 18/06/2025 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अभ्यास कराते हुए।



दिनांक 18/06/2025 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सामूहिक छायाचित्र।



श्री मैथ्यूस मैथ्यू, उप महालेखाकार (प्रशा.), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, दिनांक 10/12/2024 को आयोजित हिन्दी संगोष्ठी के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए।



डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्र, हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष, नेहरू शिलांग एवं संकाय विशेषज्ञ दिनांक 10/12/2024 को आयोजित हिन्दी संगोष्ठी के अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।



दिनांक 10/12/2024 को आयोजित हिन्दी संगोष्ठी में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सामूहिक छायाचित्र।



दिनांक 10/12/2024 को आयोजित हिन्दी संगोष्ठी में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की एक झलक।



डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्र, हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष, नेहू, शिलांग एवं संकाय विशेषज्ञ दिनांक 10/12/2024 को आयोजित हिन्दी संगोष्ठी के अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अभ्यास कराते हुए।



दिनांक 10/12/2024 को आयोजित हिन्दी संगोष्ठी में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की एक झलक।



मुहम्मद जियाउल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग दिनांक 18/03/2025 को आयोजित आंतरिक प्रशिक्षण के अवसर पर इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को “हिंदी पत्राचार एवं टिप्पण” और “कंठस्थ 2.0” सॉफ्टवेयर/टूल पर प्रशिक्षण देते हुए।



श्री जितिन कुमार, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग दिनांक 18/03/2025 को आयोजित आंतरिक प्रशिक्षण के अवसर पर इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को “हिंदी पत्राचार एवं टिप्पण” और “कंठस्थ 2.0” सॉफ्टवेयर/टूल पर प्रशिक्षण देते हुए।



दिनांक 18/03/2025 को आयोजित आंतरिक प्रशिक्षण के अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की एक झलक।



दिनांक 27/03/2025 को श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर मेमेंटो भेंट करते हुए श्री मैथ्यूस मैथ्यू, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



दिनांक 27/03/2025 को श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।



दिनांक 27/03/2025 को श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर समूह अधिकारियों की एक झलक।



दिनांक 27/03/2025 को श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) सहित हिंदी स्टाफ की एक झलक।



दिनांक 27/03/2025 को श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर गीत प्रस्तुत करती हुई श्रीमती डोना मैरी नोंगख्लाव, स.ले.प.अ.।



दिनांक 27/03/2025 को श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर कविता पाठ करते हुए श्री विशाल, स.ले.प.अ.।



दिनांक 27/03/2025 को श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर गीत प्रस्तुत करती हुई श्रीमती लूसिले मैग्डलीन वान्सवेट, स.ले.प.अ.।



दिनांक 27/03/2025 को श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण कार्यक्रम का आनंद लेते हुए।



दिनांक 27/03/2025 को श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सामूहिक छायाचित्र।



श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग दिनांक 19/03/2025 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में इस कार्यालय के श्री नारंग टाका, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा) और श्री रितिनकर दत्ता, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के पदोन्नति के अवसर पर अभिभाषण देते हुए।



श्री नारंग टाका, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, मुहम्मद जियाऊल हक, सहायक निदेशक (राजभाषा) और श्री रितिनकर दत्ता, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ने दिनांक 19/03/2025 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में पदोन्नति के अवसर पर अभिभाषण देते हुए।



दिनांक 19/03/2025 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में पदोन्नति हेतु लंच पार्टी के अवसर पर उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण की एक झलक।



दिनांक 19/03/2025 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में पदोन्नति हेतु लंच पार्टी के अवसर पर समूह अधिकारियों द्वारा मध्याह्न भोजन उपभोग करने की एक झलक।



दिनांक 19/03/2025 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में पदोन्नति हेतु लंच पार्टी के अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा मध्याह्न भोजन उपभोग हेतु कतार में खड़े होने की एक झलक।



दिनांक 19/03/2025 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में पदोन्नति हेतु लंच पार्टी के अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा मध्याह्न भोजन उपभोग करने की एक झलक।



दिनांक 19/03/2025 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में पदोन्नति हेतु लंच पार्टी के अवसर पर अधिकारियों द्वारा मध्याह्न भोजन उपभोग करने की एक झलक।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 17/09/2024 को आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता की एक झलक।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 18/09/2024 को आयोजित हिंदी हस्तलेख या लिखावट प्रतियोगिता की एक झलक।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 19/09/2024 को आयोजित हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद एवं विलोमत : प्रतियोगिता की एक झलक।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 27/09/2024 को आयोजित अंत्याक्षरी प्रतियोगिता की एक झलक।

प्रातः खबर

HIN-2005-15049 PRATAH KHABAR, Guwahati, Wednesday, 2 October, 2024 বৰে ২১ অক্টোবৰ, ২০২৪, বুধবাৰ ২ অক্টোবৰ, ২০২৪, বিজয় সন্ধ্যা ২০২৪

शिलांग क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान में हिंदी पखवाड़ा आयोजित

[illegible][illegible][illegible]

सिपियसियाजी के विहेदाजी को जप, दुर्लभ और सुविध पुस्तक के लिए नवत पुस्तक क्रय - 2,500, रु. 2,000 और रु. 1,500 समुत अधिकाधिक के बरकजो द्वारा प्रदान किए गए। इस प्रकार का समुत, कर्तव्य और भी आगे बढ़ने दिया गया था बरको को प्रदान प्रदान किए गए। अतः वे इस भी शिष्ट पुस्तक को बरकज का समुत बरकज प्रदान करने लगे, जिला का जप करने लगे, तब तक तक के प्रदान करने के साथ किया गया।

गुवाहाटी और जोरहाट से प्रकाशित

पूर्वांचल प्रहरी

गुवाहाटी और जोरहाट से प्रकाशित

पूर्वोत्तर भारत का प्रथम हिंदी दैनिक

International Yoga Day / Special Offer
Anahita Datta's
The Yoga Studio
FREE
REGISTRATION
on 21st June
6.30 am to 7.30 am
(Studio Address: CHANDMARU)
(U-Turn: Flyover)
Pudh. Bldg., City-3

शुक्रवार 20 जून 2025

मेघालय की खबर

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग में हिंदी कार्यशाला संपन्न

शिल्लोंग: हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यवाहीय कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु कार्यवाह्य प्रधान महालखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिल्लोंग में दिनांक 18 जून, 2025 को कार्यवाह्य के सम्मेलन कक्ष में अधिकारियों एवं कार्यवाहियों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रारंभ में शीर्षी धनसनी चौरिसिया, वरिष्ठ उप महालखाकार (प्रशासन) ने दुर्गन्धित अधिकारियों एवं कार्यवाहियों का स्वागत किया। इस अवसर पर पी.ओ. रिगलेल्हो, प्रधान महालखाकार के सचिव, एकावतियस मैथ्यू, स्थानिय अधिकारी एवं संकाय सदस्य प्रोफेसर जॉर्ज

समय की पाण्डेय, क्षेत्रीय निदेशक, मेडोस विधि संस्थान, सिलॉन उपनिवेश में। अपने उद्घाटन भाषण में श्रीमती धनसमोटी चट्टोपाध्याय जी ने कहा कि कार्यपालक का मुख्य उद्देश्य सरकारी काम-काज में प्रयुक्त होने वाली व्यवहारिक हिन्दी का अभ्यास करवाना है, जिससे कार्यपालताओं में समझौतापूर्ण हो सके और अधिकार/व्यवसाय/व्यक्तिगत रूप से हिन्दी में मांसी और दिव्यविधि सिख सकें। हमने कार्यपालक के लिए यह गर्व की बात है कि राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हम हिन्दी कार्यपालक का अद्यतन कर रहे हैं जिससे, प्रत्येक व्यक्ति काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देकर कार्यपालक के माध्यम से हम हिन्दी में



कार्य करने की शिक्षा को दूर कर सकें। इसके अलावा मसीदा लेखन, पत्र-लेखन आदि में भी राजभाषा हिन्दी का

प्रयोग करने में हम सफल होंगे।
कार्यशालाओं के जरिए लिखावट एवं
पत्राचार में भी सुधार हो सके है।

उन्होंने आशा व्यक्त की है, कि सभी प्रतिभागी इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाएंगे साथ ही इस

कार्यशाला के माध्यम से सभी अधिकारीगण और कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने में सहाय्य मिलेगी। उक्त कार्यशाला में संकाय सदस्य के रूप में प्रोफेसर पार्थ साखी पाण्डेय, क्षेत्रीय निदेशक, शिलांग उन्मेष्य से, जे.एन.एस.मंत्र में टिप्पण एवं मसौदा लेखन और द्वितीय सत्र में हिन्दी पत्रकार पर व्याख्यान किया तथा प्रतिभागियों द्वारा इसका अभ्यास भी कराया। इस कार्यशाला में कुल 15 अधिकारी एवं कर्मचारी भी भाग लिए। उक्त कार्यशाला का समापन समारोह हिन्दी कक्ष के सहसहक निदेशक (राजभाषा), मुहम्मद विद्यावल्लभ एक के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

शिलोंग : महालेखाकार (लेखापरीक्षा) मेघालय में हिंदी कार्यशाला संपन्न

हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने पर बल

शिलोंग, 18 जून (ए.सं.)। कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलोंग में बुधवार को कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रारंभ में धनलक्ष्मी चौरसिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर पीआर रिंगखलेम, प्रधान महालेखाकार के सचिव एक्वायर्स मैथ्यू, स्थापना अधिकारी और संकाय सदस्य प्रो. पार्थ सारथी पांडेय, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलोंग उपस्थित थे।

अपने उद्घाटन भाषण में श्रीमती चौरसिया ने कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य सरकारी काम-काज में



प्रयुक्त होने वाली व्यावहारिक हिंदी का अभ्यास करवाना है, जिससे कार्यशालाओं में सम्मिलित होने वाले अधिकारीगण/कर्मचारीगण मौलिक रूप से हिंदी में मसौदे और टिप्पणियां लिख सकें। हमारे कार्यालय के लिए यह गर्व की बात है कि राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हम हिंदी कार्यशाला का आयोजन कर रहे हैं जिससे कार्यालयीन काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिले एवं कार्यशाला के माध्यम से हम हिंदी में कार्य करने की क्षमता को दूर कर सकें। इसके अलावा मसौदा लेखन, पत्र-लेखन आदि में भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने में हम सफल होंगे।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी प्रतिभागी इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाएंगे।

उक्त कार्यशाला में संकाय सदस्य के रूप में प्रो. पांडेय, क्षेत्रीय निदेशक, शिलोंग उपस्थित थे, जिन्होंने प्रथम सत्र में टिप्पण एवं मसौदा लेखन और द्वितीय सत्र में हिंदी पत्राचार पर व्याख्यान किया तथा प्रतिभागियों द्वारा इसका अभ्यास भी कराया। इस कार्यशाला में कुल 15 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का समापन समारोह हिंदी कक्ष के सहायक निदेशक (राजभाषा), मुहम्मद जियाउल हक के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

गुवाहाटी व जोरहाट से एक साथ प्रकाशित

सच से समझीता नहीं

प्रातः खबर

ISSN/2005/15049 PRATAH KHABAR, Guwahati, Thursday, 4 September, 2025 का 22 वर्ष 128, गुवाहाटी, असम, 4 सितंबर, 2025, विक्रय मूल्य 100₹

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, शिलोंग में हिंदी कार्यशाला संपन्न



शिलोंग, 3 सितंबर (ख.सं.)। हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलोंग में आज कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रारंभ में पीआर रिंगखलेम, प्रधान महालेखाकार के सचिव ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। इस अवसर पर सौत

वक्ता एवं विशेषज्ञ डॉ. बिक्रम थापा, हिंदी विभागाध्यक्ष, बुद्ध भानु सरस्वती महाविद्यालय, शिलोंग उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में पीआर रिंगखलेम ने कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य सरकारी काम-काज में प्रयुक्त होने वाली व्यावहारिक हिंदी का अभ्यास करवाना है, जिससे कार्यशालाओं में सम्मिलित होने वाले अधिकारीगण/कर्मचारीगण मौलिक रूप से हिंदी में मसौदे और टिप्पणियां लिख सकें। हमारे कार्यालय के लिए यह गर्व की बात है कि

राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हम हिंदी कार्यशाला का आयोजन कर रहे हैं जिससे, कार्यालयीन काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिले एवं कार्यशाला के माध्यम से हम हिंदी में कार्य करने की क्षमता को दूर कर सकें। इसके अलावा मसौदा लेखन, पत्र-लेखन आदि में भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने में हम सफल होंगे। कार्यशालाओं के जरिये लिखावट एवं पत्राचार में भी सुधार हो सकेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की है, कि सभी प्रतिभागी इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाएंगे साथ ही इस कार्यशाला के माध्यम से सभी अधिकारीगण और कर्मचारीगण को हिंदी में काम करने में सहायता मिलेगी। उक्त कार्यशाला में सौत वक्ता एवं विशेषज्ञ के रूप में डॉ. बिक्रम थापा, हिंदी विभागाध्यक्ष, बुद्ध भानु सरस्वती महाविद्यालय, शिलोंग उपस्थित थे, जिन्होंने प्रथम सत्र में टिप्पण एवं मसौदा लेखन और द्वितीय सत्र में हिंदी पत्राचार पर व्याख्यान किया तथा प्रतिभागियों द्वारा इसका अभ्यास भी कराया। इस कार्यशाला में कुल 18 अधिकारी एवं कर्मचारी ने भाग लिए। उक्त कार्यशाला का समापन समारोह हिंदी कक्ष के सहायक निदेशक (राजभाषा), मुहम्मद जियाउल हक के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

सादा जीवन और उच्च विचार

- श्री सौम्यदीप चौधरी
पुत्र - श्री संदीपन चौधरी
सहायक पर्यवेक्षक

जीवन में सादगी और उच्च विचारों का बहुत महत्व है। सादा जीवन से अर्थ है जीवन की सादगी। जीवन की सादगी का अर्थ रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा को सादगी तथा दया, क्षमा, प्रेम, उदारता इत्यादि गुणों का उत्पन्न होना। उच्च विचार का पारस्परिक सम्बंध है। एक के अभाव में दूसरे का होना सम्भव नहीं है। यदि जीवन में सादगी नहीं है तो उच्च विचारों का जन्म नहीं हो सकता। उच्च विचारों के जन्म के लिए जीवन की सादगी आवश्यक है।

सादा जीवन और उच्च विचार देश एवं समाज के जीवन को ऊँचा उठाता है। इस तरह के जीवन से एक व्यक्ति का चरित्र सुधार जाता है। वह स्वयं सुखी

होती है और दूसरों के जीवन को भी सुखमय बनाता है। परोपकार और लोक सेवा के भाव का जन्म होती है। भारत के ऋषिमुनि और महापुरुषों ने इसके महत्व को समझा था। इसी का परिणाम है कि भारत किसी समय जगत का गुरु माना जाता था। आज हमारा देश, विदेशी सभ्यता का अन्धाधुन्ध अनुकरण कर रहा है। फलस्वरूप भारत की संस्कृति और सभ्यता का दिनप्रतिदिन पतन हो रहा है। जब तक देश पुनः सादा जीवन और सभ्यता तथा उच्च विचारों के महत्व को नहीं समझेगा तब तक भारत जगत का गुरु नहीं बन सकता। इसके अलावा पतितों और गिरे हुए लोगों का रक्षक भी नहीं बन सकता।



कल का क्या भरोसा

- श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

किसी की जिंदगी छोटी,
तो किसी की बड़ी होती है।
मौत किसी के दरवाजे पर,
तो किसी के सर पर खड़ी होती है।

कौन जाने किसी के हिस्से में,
कल का सूरज आएगा कि नहीं।
जिससे मुँह फुलाकर बैठे हो आज,
वो क्या पता कल मिल जाएगा की नहीं।

दिल से जुड़े रिश्तों को,
यूँ ना गलत फहमियों का शिकार बताइए।
मन-मुटाव की इस गांठ को,
इतना कस कर ना लगाइए।

ये वक्त की रेत हाथों से,
पल में फिसल जाएगी।
तुम आवाज लगाते रहोगे,
और वो बहुत दूर निकल जाएगी।

खासी भाषा : एक सांस्कृतिक धरोहर

- श्री ईश्वर सिंह

पिताजी - श्री जितिन कुमार

कनिष्ठ अनुवादक



भारत अपनी विविध भाषाओं और बोलियों के लिए जाना जाता है। इन्हीं में से एक है खासी भाषा, जो उत्तर-पूर्वी राज्य मेघालय की प्रमुख जनजाति खासी समुदाय की मातृभाषा है। यह भाषा केवल संवाद का साधन ही नहीं, बल्कि लोगों की परंपरा, संस्कृति और जीवन दर्शन का आईना है।

खासी भाषा का उद्भव बहुत प्राचीन माना जाता है। यह “ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार” से संबंधित है, जिसमें दक्षिण-पूर्व एशिया की कई भाषाएँ शामिल हैं। इस परिवार से जुड़ी अन्य भाषाओं की तुलना में खासी भाषा भारत में एक अनोखी पहचान रखती है। खासी भाषा का लिपि-प्रयोग ईसाई मिशनरियों के आगमन के बाद अधिक व्यवस्थित हुआ। 19वीं शताब्दी में वेल्श मिशनरियों ने इसे “रोमन लिपि” में लिखना शुरू किया। इससे भाषा का लिखित रूप विकसित हुआ और साहित्य की परंपरा भी पनपी। आज खासी भाषा में कई प्रकार की “लोककथाएँ, लोकगीत और लोकनृत्य” जुड़े हुए हैं, जो इस समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं। विवाह, त्योहार और सामाजिक अवसरों पर गाए जाने वाले गीत खासी समाज की मौखिक परंपरा का हिस्सा हैं।

शैक्षिक और प्रशासनिक स्तर पर भी खासी भाषा की उपस्थिति महत्वपूर्ण है। यह भाषा मेघालय के कई विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। मेघालय बोर्ड ने इसे अपनी पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया है। साथ ही, अखबारों, रेडियो और टेलीविजन में भी खासी भाषा का प्रयोग बढ़ रहा है। खासी भाषा का सबसे बड़ी योगदान है अपने समाज की मातृसत्तात्मक परंपरा को संरक्षित करना। खासी समाज में संपत्ति और वंश परंपरा माँ से आगे बढ़ती है। इस व्यवस्था की झलक उनकी भाषा और लोककथाओं में स्पष्ट दिखाई देती है।

आज के वैश्विक युग में, जब कई भाषाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं, खासी भाषा को बचाए रखना बेहद आवश्यक है। सौभाग्य से, मेघालय सरकार और स्थानीय संगठन इस भाषा के संवर्धन और प्रचार-प्रसार में निरंतर कार्य कर रहे हैं। अंततः खासी भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है, जो हमें यह सिखाती है कि भाषा से ही संस्कृति जीवित रहती है। यह भाषा भारत की भाषाई विविधता को और भी समृद्ध बनाती है।



पूर्वोत्तर की वादियाँ

- सुश्री श्रुति हलदर

बहन - श्री पीयूष हलदर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत का अनछुआ स्वर्ग - पूर्वोत्तर की वादियाँ
पूर्वोत्तर में भारत का रत्न छिपा,
जहाँ प्रकृति ने अपना घर रचा।
हर घाटी, हर पहाड़ में गीत बसा,
जैसे कोई सपना धीरे-धीरे खुला।

सिक्किम में खड़ी है कंचनजंघा, बर्फ की रानी,
सूरज की पहली किरणों से करती मनमोहक बयानी।
नीला आसमान, श्वेत श्रृंगार,
प्रकृति का यह रूप है सबसे अद्भुत उपहार।
असम की शान है काजीरंगा का जंगल,
जहाँ गैंडे चलते हैं निडर और संबल।

हिरणों की छलांग, पक्षियों की पुकार,
हर पेड़-पौधा गाता है जीवन का सार।
नागालैंड की दजूको घाटी, फूलों का सागर,
हरा कालीन ओढ़े, हर कोना है भावनगर।

कभी धुंध में छिप जाए, कभी सूरज से दमक जाए,
यह घाटी मन को भीतर तक महकाए।
मणिपुर की लोकटक झील, अनोखी और शांत,
जहाँ पानी पर तैरती हैं जिंदगी की बात।

फुमदी की नावें, जैसे सपनों की पंखुड़ियाँ,
हर लहर में बहती हैं स्मृतियाँ।
मेघालय के झरनों की बात ही निराली,
हर गिरती बूंद बन जाए जैसे जादू की थाली।

नोहकलिकाई, दैनथलेन और एलिफैंटा फॉल्स का रंग,
धरती के स्वर में गूँजे उनका संग।
पूर्वोत्तर नहीं बस एक दिशा है,
यह तो प्रकृति की विशेष अभिव्यक्षा है।
भारत का असली रंग, असली गीत,
यहीं बसते हैं - शांत, गहरे और अतीव।



शिलांग में बाहरी लोगों का जीवन : समस्याएँ, भावनाएँ और योगदान



- श्रीमती संगीता मिन्की
पत्नी - श्री रितेश आनंद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

1. प्रस्तावना (भूमिका) - शिलांग (मेघालय की राजधानी) को पूर्वोत्तर का स्कॉटलैंड कहा जाता है। यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता, पहाड़ी संस्कृति और शांति के लिए जाना जाता है। यहाँ की खासी, जयंतिया और गारो जनजातियाँ इस क्षेत्र की प्रमुख मूलनिवासी जनजातियाँ हैं। यहाँ की खासी, जयंतिया और गारो जनजातियाँ इस क्षेत्र की प्रमुख मूलनिवासी जनजातियाँ हैं। लेकिन स्वतंत्रता के बाद से ही, शिलांग में बाहरी राज्यों से आए लोग चाहे वे सरकारी कर्मचारी हों, व्यापारी हों, शिक्षक हों या मजदूर ने भी यहाँ अपना जीवन बिताया है। यह बाहरी लोग अक्सर 60 साल तक लगातार सेवा करते हैं, लेकिन रिटायरमेंट के बाद उनकी स्थिति ऐसी होती है कि वे न अपने मूल नगर/गाँव के रहते हैं और न ही शिलांग के, जैसे -

- अपने गृहनगर से संपर्क टूट चुका होता है।
- शिलांग में उन्हें स्थायी रूप से भूमि खरीदने का अधिकार नहीं मिलता।
- इसलिए उनकी पीड़ा दोहरी होती है ना घर के, ना घाट के।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि -

(क) अंग्रेजी शासनकाल और शिलांग का उदय -

- अंग्रेजों ने 1864 में शिलांग को असम प्रांत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया।
- यहाँ सड़कों, दफ्तरों और शैक्षिक संस्थानों का विकास हुआ।
- डाक व्यवस्था के लिए बाहरी राज्यों से कर्मचारियों को लाया गया।

(ख) शिक्षा और मिशनरी योगदान -

- यूरोपीय मिशनरियों ने आधुनिक शिक्षा की नींव रखी।
- लेकिन साथ ही बिहार, बंगाल और उत्तर प्रदेश से कई अध्यापक और प्रोफेसर यहाँ आकर बसे।

(ग) राज्य पुनर्गठन और मेघालय का गठन -

- 1972 में मेघालय को अलग राज्य का दर्जा मिला।
- उसके बाद भूमि कानूनों और “जनजातीय संरक्षण” के नाम पर बाहर के लोगों को स्थायी स्वामित्व से वंचित कर दिया गया।

3. बाहरी लोगों की पहचान और जनसंख्या संरचना -

(क) कहाँ से आए लोग ? बिहार, उत्तर

प्रदेश, बंगाल, पंजाब, केरल और त्रिपुरा : शिक्षक, व्यापारी, सरकारी दफ्तरों और शिक्षा क्षेत्र में, स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रशासनिक सेवा, व्यवसाय, कृषि उत्पाद और दुकानें।

(ख) सरकारी सेवा में योगदान -

- डाक विभाग, केंद्रीय लेखा परीक्षा, सेना, पुलिस, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा में नौकरी करते रहे।

(ग) दूसरी और तीसरी पीढ़ी की स्थिति -

- बच्चे यहीं पैदा हुए और पले-बढ़े।
- स्थानीय भाषा और संस्कृति से परिचित।
- लेकिन भूमि अधिकार न मिलने के कारण उन्हें स्थायी नागरिकता नहीं मिल पाती।

4. बाहरी लोगों की समस्याएँ -

(क) भूमि और घर का संकट -

- 60 साल सेवा करने के बाद भी प्लॉट या मकान नहीं खरीद सकते।
- पूरी उम्र किराये के मकान या सरकारी क्वार्टर में गुजरी।
- रिटायरमेंट के बाद स्थायी आश्रय का संकट।
- उदाहरण: एक सरकारी कर्मचारी ने 40 साल सेवा की, लेकिन रिटायरमेंट के बाद वापस लौटना पड़ा क्योंकि यहाँ जमीन नहीं खरीद सकते थे।

(ख) पहचान का संकट -

- हम शिलांग के भी नहीं और अपने मूल गाँव के भी नहीं।

- बच्चे कहते हैं - हमने गाँव कभी देखा ही नहीं, हम तो शिलांग के हैं।

- लेकिन स्थानीय लोग उन्हें बाहरी कहकर अलग कर देते हैं।

(ग) सामाजिक दूरी और भेदभाव -

- कभी-कभी उन्हें स्थानीय समाज में “बाहरी” कहकर भेदभाव का सामना करना पड़ता है।
- राजनीति और नौकरियों में स्थानीय आरक्षण।
- सामाजिक कार्यक्रमों में दूरी।

(घ) आर्थिक असुरक्षा -

- रिटायरमेंट के बाद “अपना घर” न होने के कारण बढ़ा बोझ।
- बच्चों की शिक्षा और शादी-ब्याह में अतिरिक्त परेशानी।

5. भावनाएँ और पीड़ा -

1. “हम कहीं के नहीं रहे” - यह सबसे बड़ी वेदना है।
2. पूरे जीवन काम करके भी सम्मानजनक बुढ़ापा न मिलना।
3. बच्चों का भविष्य असुरक्षित।
4. भावनात्मक टूटन - शिलांग की सेवा करने के बाद भी स्थानीय समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता।

6. शिलांग के विकास में बाहरी लोगों का योगदान -

(क) शिक्षा -

- स्कूलों और कॉलेजों में बाहर से आए अध्यापकों

ने योगदान दिया।

- हिंदी और अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार।

(ख) स्वास्थ्य -

- डॉक्टर और नर्सों ने अस्पतालों की नींव रखी।

(ग) सरकारी सेवा -

- केंद्रीय और राज्य प्रशासन को सुचारू रूप से चलाया।

(घ) व्यापार -

- कपड़ा, किराना, दवा, परिवहन और होटल व्यवसाय में योगदान।

(ङ) संस्कृति -

- हिंदी फिल्म, साहित्य और राष्ट्रीय एकता की भावना।

7. स्थानीय समाज को लाभ -

- राजस्व और कर में वृद्धि।
- रोजगार का सृजन।
- व्यापार और बाजार का विस्तार।
- आधुनिक शिक्षा और तकनीक की उपलब्धता।

8. नीतिगत विसंगतियाँ -

- भूमि कानून केवल स्थानीय जनजातियों के पक्ष में।
- बाहरी व्यक्तियों के लिए स्थायी अधिकार का अभाव।

केंद्र और राज्य सरकारों की दोहरी नीति।

इससे राष्ट्रीय एकता पर प्रश्नचिह्न।

9. समाधान और विकल्प -

(क) नीति सुधार -

- दीर्घकालिक सेवा देने वालों को भूमि खरीदने का अधिकार दिया जाए।
- सीमित क्षेत्र और सुरक्षा प्रावधानों के साथ।

(ख) स्थायी निवास अधिकार -

- 30-40 साल सेवा करने वालों को स्थायी नागरिकता कार्ड।

(ग) सामाजिक समरसता -

- सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी संवाद।

(घ) राजनीतिक पहल

- संसद और विधानसभा में यह मुद्दा उठें।
- गृह मंत्रालय और नीति आयोग हस्तक्षेप करें।

10. निष्कर्ष - शिलांग के विकास में बाहरी लोगों का योगदान असंदिग्ध है। लेकिन 60 साल की सेवा के बाद भी अगर उन्हें एक छोटा-सा घर बनाने का अधिकार न मिले, तो यह अन्याय है। यह केवल भूमि का नहीं, बल्कि सम्मान और पहचान का सवाल है। भारत की एकता और अखंडता की भावना यही कहती है कि जो लोग जीवन भर सेवा करते हैं, उन्हें भी सम्मानजनक अधिकार मिलने चाहिए।



कहानी उसका होसले की

- श्रीमती सरिता देवी

माँ - श्री अमित कुमार वर्मन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

गाँव का लड़का, सपना था बड़ा,
कहता था माँ से - “करूँगा मैं कुछ बड़ा”।

झोपड़ी में पढ़ता, दीये की रौशनी में,
मन लगाता किताबों की हर एक पंक्ति में।

लोगों ने हँसा, कहा - “कुछ नहीं होगा तुझसे”,
पर माँ ने कहा - “रुक मत, चल पड़ सच्चे रास्ते से”।

पहला इम्तिहान, वो हार गया,
दूसरे में भी किस्मत से मारा गया।

पर आँखों में आँसू नहीं, जोश था साथ,
कहता - “रुकूँगा नहीं, चाहे हो कितनी भी रात”।

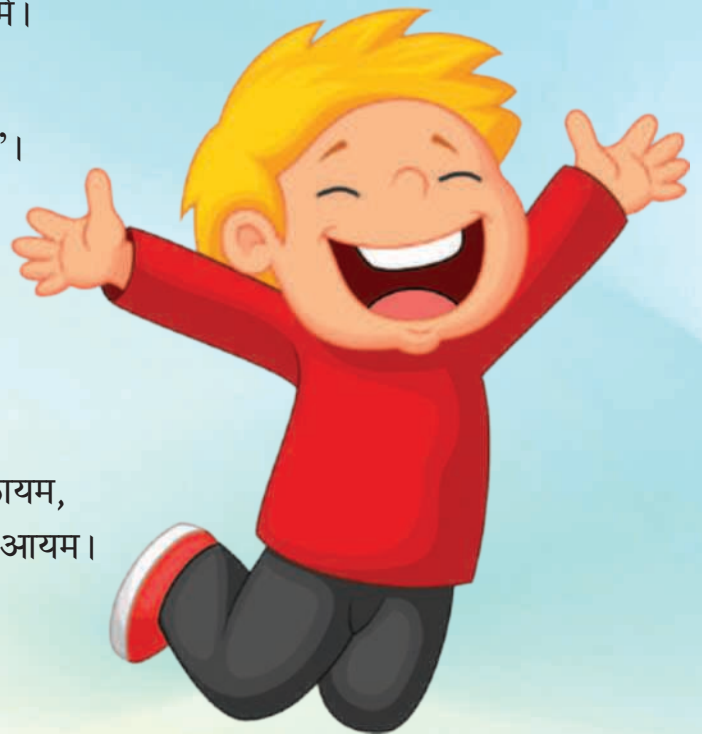
दिन बीते, साल बदले, सपने फिर भी कायम,
मेहनत से लिखा उसने, किस्मत का हर आयम।

आखिरकार वो दिन भी आया,
जब संघर्ष का सूरज चमक कर छाया।

वही जो कभी चाय की दुकान चलाता,
आज देश के बच्चों को पढ़ाता।

एक दिन वहीं नाम बना मिसाल,
जिसने हर ठोकर को बनाया सीढ़ी कमाल।

बोला वो हँसकर - “मैं, कोई खास नहीं था कभी”,
पर हारा नहीं, यही बात बन गई सबसे बड़ी जीत अभी।



काजीरंगा नेशनल पार्क



- श्रीमती मुमताज बेगम,
पत्नी - मुहम्मद जियाऊल हक
सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्राकृतिक नजारों से सराबोर असम की वादियाँ अन्य स्थानों की तुलना में बेहद रोमांचकारी हैं। दरअसल ब्रह्मपुत्र नद असम की मुख्य पहँचान है। पहाड़, जंगल और बाँयलॉजिकेल विविधताओं वाला यह राज्य सैलानियों के लिए हमेशा से आकर्षण का केन्द्र बना रहा है। प्राकृतिक छटा और उससे जुड़ी दंतकथाओं ने असम को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि दी है। यह प्रदेश प्रकृति की खूबसूरती के साथ-साथ कुछ ऐसे जीवों का आशियाना भी है जो अब प्रायः लुप्त होने के कगार पर हैं। एक सींग वाले गैंडे, हुलक, गिबबन, हाथी, बाघ, स्लॉथ बीयर और न जाने कितनी तरह के जीव-जंतु तथा कलरव करते पक्षी यहाँ के इन वनों में विचरण करते हैं।

काजीरंगा असम का सबसे पुराना नेशनल पार्क है। 440 वर्ग किलोमीटर में फैला यह पार्क एक सींग वाले गैंडे के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हाथी पर बैठकर पार्क की सैर और जंगली जानवरों को एकदम पास से देखने का रोमांच ही कुछ ओर है। यह गुवाहाटी शहर से 217 किलोमीटर दूर है। यहाँ का निकटतम एयरपोर्ट जोरहाट है, जबकि निकटतम रेलवे स्टेशन दीमापुर है। गुवाहाटी से यहाँ के लिए लग्जरी बस आदि सेवाएँ उपलब्ध हैं। मध्य असम में बसा काजीरंगा नेशनल पार्क पूर्वी भारत के अंतिम छोर का पार्क है। काजीरंगा का प्राकृतिक परिवेश हरे-भरे जंगलों से भरा हुआ है। साथ ही, यह क्षेत्र बड़ी-बड़ी एलिफेंट ग्रास, दलदली स्थान और उथले तालाब से भरा है।

इसलिए यह कई अन्य स्तनपाई जीवों - गैंडा, बाघ, हाथी, चीते, भालू, लंगूर, जंगली बिल्ली, भेड़िया और अजगर के अलावा सैकड़ों चिड़ियों के आवास भी हैं। यहाँ आमतौर पर पेलिकन, बतख, कलहंस, आइबिस, जलका, बगुला, लेसर एडजुलेंट और ईगल बड़ी संख्या में आसानी से देखे जा सकते हैं।

वर्ल्ड हेरिटेज साइट :- काजीरंगा को 1908 में रिजर्व फॉरेस्ट और 1950 में वाइल्ड लाइफ सेंचुरी घोषित किया गया। 1985 में 'यूनेस्को' ने इसे वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया। ब्रह्मपुत्र नदी के पश्चिमी किनारे पर मिकीर पर्वत की तलहटी पर बसा यह पार्क ब्रह्मपुत्र के बाढ़ के समतली क्षेत्र में बसा हुआ है। यहाँ का जीवन लंबे और घने घास के मैदान के साथ खुले जंगलों, परस्पर जुड़े प्रवाह और ढेरों छोटी झीलों के अनुकूल है। इस पार्क का तीन चौथाई से ज्यादा भाग हर साल ब्रह्मपुत्र की बाढ़ में डूब जाती है। ब्रह्मपुत्र नदी मिट्टी बहाकर यहाँ लाती है। काजीरंगा में तीन मुख्य वनस्पतियाँ पाई जाती हैं जलप्लावित घास का मैदान, ऊष्णकटिबंधीय सदाबहार वन और ऊष्णकटिबंधीय अर्ध-सदाबहार वन। इसके पश्चिमी क्षेत्र में घास का मैदान है, जहाँ ऊँचाई पर लंबी-लंबी 'एलिफेंट' घास लगी है, तो निचले हिस्से यानी भील्स (झील) के आसपास छोटी घास लगी हैं।

सदाबहार वन :- ये हर साल आने वाली बाढ़ के कारण कायम रहती है। ऊष्णकटिबंधीय दलदली सदाबहार वन कंचाझुरी, पनवारी आदि के पास स्थित है,

जो वृक्षों से ढका रहता है। ऊष्णकटिबंधीय अर्ध सदाबहार वन बागुरी, बिमाली और हल्दीबारी के पास स्थित हैं।

पार्क में भारत की संकटग्रस्त प्रजाति के 15 स्तनपायी पाये जाते हैं। काजीरंगा पार्क दुनियाभर में सबसे ज्यादा संख्या में भारतीय गैंडों और हाथी का आवास है। इनके अलावा कई तरह के जीव-जंतु यहाँ पाये जाते हैं। यहाँ रहने वाले हाथी और अन्य जानवर मानसून के आगमन पर नेशनल पार्क में हर साल आने वाली बाढ़ से बचने के लिए दक्षिण की ओर मिकीर हिल्स या उससे आगे की ओर प्रवास कर जाते हैं। यहाँ बने विभिन्न जलाशयों में मछली और प्रवासी पक्षियों का समृद्ध खजाना भी है। यहाँ प्रवासी पक्षियों की सौ से भी ज्यादा प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जो सदियों में सुदूर साइबेरिया से यहाँ आती हैं।

ग्रेपेल्लन का ब्रीडिंग ग्राउंड :- इसके अलावा, काजीरंगा गाँव के पास ग्रेपेल्लन का ब्रीडिंग ग्राउंड है। यहाँ आने वाले अन्य पक्षियों में ब्लैकनेकड स्टॉर्क, पल्लास फिश, ईगल, ग्रेहेड फिश ईगल, बंगाल फ्लोरिकन, स्वाम्प पार्टरिज, ग्रेपीकॉक फिसंट, ग्रेट पेड हॉर्नबिल, ग्रीन इम्पीरियल पिजन, सिल्वर ब्रेस्टेड ब्रोडबिल के अलावा एविफाउना की लगभग तीन सौ प्रजातियाँ पाई जाती हैं। काजीरंगा नेशनल पार्क में सरीसृपों में मुख्यतः वाटर मॉनीटर, इंडियन पाइथन, कॉमन कोबरा और किंग कोबरा आसानी से देखे जा सकते हैं।

परिवहन :- काजीरंगा गुवाहाटी शहर से 217 किलोमीटर पूर्व और जोरहाट से 97 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह गुवाहाटी हवाई अड्डे से 239 किलोमीटर दूर है। काजीरंगा जाने के लिए नियमित रूप से राज्य सरकार की बसें, ट्रेवल एजेंसीज के द्वारा चलाई जा रही बसें, टैक्सी आदि भी उपलब्ध हैं। काजीरंगा जाते वक्त मिलने वाले बस पड़ाव को

कोहोरा के नाम से जानते हैं। यहाँ से नजदीकी रेल सेवा 75 किलोमीटर दूर है।

शिकारियों का आतंक :- असम के काजीरंगा नेशनल पार्क में समय-समय पर शिकारियों का आतंक मचा रहता है। मौका मिलते ही शिकारी गैंडे और हाथी को गोली मार कर हत्या कर देते हैं तथा उसके बहुमूल्य सींग एवं दाँतों को चुरा ले जाते हैं। पशुओं पर हो रहे निरन्तर हमले के विरोध में स्थानीय लोगों द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग-37 को भी बंद करने का प्रयास किया जाता है। इसके अलावा प्रदर्शनकारियों द्वारा नेताओं के पुतले भी जलाये जाते हैं। दूसरी ओर वन अधिकारियों द्वारा शिकारियों को पकड़ने के लिए हाई अलर्ट घोषित करने का दावा किया जाता है।

काजीरंगा नेशनल पार्क में बाढ़ :- काजीरंगा नेशनल पार्क के 70% (फीसदी) हिस्से में बाढ़ का पानी घुस जाने से कई जानवरों की मौत हो जाती है। बाढ़ का पानी पार्क में घुसने की वजह से कई जानवर नेशनल हाइवे की तरफ चले जाते हैं। नतीजतन हाइवे पर गाड़ियों की टक्कर से हिरणों एवं अन्य जानवरों की मौत हो जाती है। काजीरंगा नेशनल पार्क में कई रायल बंगाल टाइगर भी मौजूद हैं। इस अवधि के दौरान बाघ भी इधरउधर भटकने लगते हैं तथा ऊँचे स्थानों की तलाश या अनजाने में ही लोगों की बस्ती की ओर रूख करने लगते हैं। बाढ़ की वजह से पार्क प्रशासन को डर लगा रहता है कि शिकारी इसका नाजयज फायदा ना उठा लें। इसी वजह से बाढ़ के दौरान नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी के सदस्यगण असम के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरन्तर दौरा करते रहते हैं। ऐसी दयनीय स्थिति में राज्य सरकार द्वारा भी राहत कार्य जारी रखा जाता है जिससे मानव और जानवर दोनों ही सुरक्षित एवं एक दूसरे से दूरी बनाए रखने में सक्षम हो सके।



मेघालय की मातृसत्तात्मक समाज की कहानी

- सुश्री भारती सिंह
बहन - श्री जितिन कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

बहुत समय पहले जब पहाड़ों पर बादल हमेशा खेला करते थे और नदियाँ गीत गाती थीं, तब खासी और जयंतिया पहाड़ियों में एक अलग ही समाज पनप रहा था। यहाँ का नियम बाकी दुनिया से जुदा था। जहाँ अधिकतर जगहों पर वंश और संपत्ति पिता के नाम से चलती थी, वहीं इन पहाड़ियों में यह अधिकार माँ के हाथों में था।

कहानी कहती है कि खासी समाज में धरती को “काई इन” यानी माँ का घर कहा जाता है। माना जाता था कि जीवन की शुरुआत माँ से होती है, इसलिए परिवार की जड़ भी उसी से जुड़ी होनी चाहिए। यही कारण था कि बेटियाँ - विशेषकर सबसे छोटी बेटी (Khun Khadduh) घर, जमीन और परंपराओं की असली उत्तराधिकारी बनती थीं।

मध्यकालीन समय में भी जब बाहरी आक्रमणकारी या व्यापारी इन इलाकों में आए, तब भी यह परंपरा नहीं टूटी। खासी महिलाओं ने न केवल घर सँभाला बल्कि बाजारों में व्यापार का जिम्मा भी लिया। आज भी आप शिलांग और सोहरा, नोंगपोह जैसे कस्बों के पारंपरिक हाटों में देखेंगे कि बाजार की असली ताकत महिलाएँ हैं। वे ही अनाज बेचती हैं, मसाले तौलती हैं, कपड़े और आभूषण सजाती हैं।

अनुष्ठान और परंपराएँ भी इस मातृसत्तात्मक संस्कृति से गहरे जुड़ी हैं। शादी के बाद पुरुष पत्नी के घर आकर बसता है। बच्चे माँ की वंशावली से पहचाने जाते हैं। बड़े धार्मिक पर्वों पर महिलाएँ ही देवी-देवताओं को प्रसाद चढ़ाती हैं और घर की वंश की देखभाल करती हैं।

आधुनिक दौर में भी मेघालय की यह परंपरा जीवित है। हाँ, शिक्षा, नौकरी और आधुनिक राजनीति में पुरुषों की भूमिका बड़ी है, लेकिन महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक हैसियत पूरे भारत के लिए मिसाल है। राष्ट्रीय स्तर पर भी यह समाज चर्चा में रहता है क्योंकि यहाँ औरतें केवल घर की चौखट तक सीमित नहीं बल्कि निर्णय लेने और समाज को दिशा देने में भी आगे हैं।

मातृसत्तात्मक व्यवस्था की विशेषताएँ -

1. **वंश और उपनाम** - बच्चे अपनी माँ का उपनाम अपनाते हैं।
2. **संपत्ति का उत्तराधिकार** - परिवार की सबसे छोटी बेटी को जमीन और घर मिलता है।
3. **परिवार और समाज में निर्णय** - महिलाओं की राय को अधिक महत्व दिया जाता है।

4. धार्मिक अनुष्ठान - कई रीति-रिवाजों और त्योहारों में महिला की प्रमुख भूमिका होती है।

इससे बाकी भारत की महिलाओं के लिए सीख मिलती है कि -

1. औरतें घर और बाहर दोनों जगह मजबूती से खड़ी हो सकती हैं।
2. आर्थिक स्वतंत्रता समाज में बराबरी लाती है।
3. अपनी परंपराओं को संजोते हुए भी आधुनिकता

से तालमेल बिठाना संभव है।

निष्कर्ष - मेघालय का मातृसत्तात्मक समाज यह सिद्ध करता है कि जब महिलाओं को सम्मान, अधिकार और जिम्मेदारी मिलती है तो वे न केवल परिवार बल्कि पूरे समाज को सशक्त बना सकती हैं। आज के समय में, जब महिला सशक्तिकरण की बातें हर जगह हो रही हैं, मेघालय का यह मॉडल पूरे भारत और विश्व के लिए एक प्रेरणा है।

दोस्त का महत्व

- श्रीमती इबानिल्ला रिंझाह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



मोहन गर्मी की छुट्टियों में अपनी नानी के घर जाता है। वहाँ मोहन को खूब मजा आता है क्योंकि नानी के घर में एक आम का बाग है। मोहन वहाँ ढेर सारे आम खाता है और खूब खेलता है। उसके पाँच दोस्त भी हैं पर वह उन्हें आम नहीं खिलाता है।

एक दिन की बात है, मोहन को खेलते-खेलते चोट लग गई। मोहन के दोस्तों ने मोहन को उठाकर घर पहुँचाया और उसकी मम्मी से उसके चोट लगने की बात बताई। चोट पर मोहन की मम्मी ने मालिश की और उसके दोस्तों को धन्यवाद दिया। मोहन जब ठीक हुआ तब उसे दोस्तों का महत्व समझ में आ गया था। अब वह सभी दोस्तों के साथ खूब खेलता और खूब आम खाता था।

नैतिक शिक्षा - दोस्त सुख-दुख के साथी होते हैं। उनसे प्यार करना चाहिए तथा कोई बात छुपानी नहीं चाहिए।



क्यूबिकल की कहानी, यारियों की जुबानी



- श्री सुमित कुमार वर्मन
भाई - श्री अमित कुमार वर्मन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सुबह की भीड़ और बस की लाइन,
सोचते हैं फिर, “यार आज तो जाना है ऑन टाइम”।
बैग में लैपटॉप, दिल में उम्मीद,
आज ना हो मीटिंग्स की लंबी सीढ़ी।

ऑफिस पहुँचे, तो चाय की तलब,
पर बॉस ने भेज दिया, मीटिंग की डब !
कभी क्लाइट की कॉल, कभी डेटलाइन की मार,
टारगेट पूरे कर लो, वरना सब पे वार।

टाइपिंग की आवाजें, की-बोर्ड की तड़तड़,
बीच में स्लैक पे मीम्स की हल्की सी गड़गड़।
लंच के समय, टिफिन की कहानी,
किसी ने लाया राजमा, किसी की पूड़ी पुरानी।

कॉफी मशीन के पास गपशप का अड्डा,
जहाँ होता है थोड़ा ऑफिस ड्रामा भी जरा।
कभी तारीफ, कभी पीठ पीछे बात,
ऑफिस लाइफ में चलती है हर बात की सौगात।

शुक्रवार को चेहरों पे चमक कुछ खास,
मानो सोमवार का न हो कोई आभास।
मगर फिर भी, इस भागती दुनिया में,
ऑफिस के दोस्त, बनते हैं अपने जीवन में।

पर हकीकत तो ये दिल जानता है,
कि सोमवार फिर कोने में खड़ा मुस्कराता है।
इतने झमेलों में भी एक बात प्यारी,
ऑफिस के यारियाँ, सबसे ज्यादा न्यारी।

कभी काम का बोझ, कभी मजाक की बौछार,
यही तो है ऑफिस, अपना दूसरा परिवार।

नमक कितना जरूरी है

- श्रीमती अपर्णा रानी दास
पत्नी - श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बहुत पुरानी बात है। एक राजा थे जिनकी तीन राजकुमारियाँ थीं। राजा ने तीनों राजकुमारियों को शिक्षा लेने के लिए गुरु के पास गुरुकुल में भेजा था। तीनों राजकुमारियाँ कई वर्षों तक जंगल में अपने महल से दूर रहकर शिक्षा प्राप्त कर रही थीं। कई वर्ष बीत जाने के बाद वे अपने महल वापस लौटीं। राजकुमारियों के घर लौटने की खुशी में राजा ने बहुत बड़ी दावत का आयोजन किया था। राजा ने अपनी तीनों राजकुमारियों को दावत के दौरान राजमहल में उपस्थित रहने का आदेश दिया था। दावत शुरू हुई तो राजा ने अपने महामंत्री से कहा, मंत्री जी, क्या आप राजकुमारियों से कोई सवाल करना चाहेंगे ? हमें

भी तो मालूम हो कि हमारी राजकुमारियाँ हमसे दूर रहकर गुरु से क्या शिक्षा पाकर वापस आई हैं।

राजा की बात सुनकर मंत्री जी ने कहा, “अवश्य महाराज, “मैं, इन तीनों राजकुमारियों से एक ही सवाल करना चाहूंगा। आपका प्यार तो हमें मालूम है कि आप तीनों राजकुमारियों को एक समान प्यार करते हैं, पर हम सभी सभा में उपस्थित यही जानना चाहेंगे कि तीनों राजकुमारियाँ आपसे कितना प्यार करती हैं”। बड़ी राजकुमारी ने तुरंत उत्तर दिया, “हम महाराज को इतना प्यार करते हैं जितना सूर्य इस धरती से करता है”। राजकुमारी का उत्तर सुनकर सभा में उपस्थित लोग खुश हो गए। दूसरी राजकुमारी ने कहा, “मैं,

महाराज को इतना प्यार करती हूँ जितना महाराज अपनी प्रजा से करते हैं। महाराज यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हो गए। सभी लोग यह उत्तर सुनकर प्रसन्न हो गए। तीसरी राजकुमारी ने उत्तर दिया, “मैं, महाराज को इतना प्यार करती हूँ जितना लोग खाने में नमक से करते हैं। तीसरी राजकुमारी के उत्तर से सभा में उपस्थित सभी लोग हँसने लगे।

मंत्री चुपचाप राजकुमारी के उत्तर पर विचार कर रहा था। तभी महाराज की गुस्से भरी आवाज मंत्री के कानों में पड़ी - “मंत्री जी, अभी तुरंत आप कुछ सिपाहियों के साथ जंगल की ओर प्रस्थान करें। मंत्री जी, आप तुरंत राजकुमारी को ले जाकर दूर जंगल में छोड़कर आएँ। हमें लगता है अभी राजकुमारी की शिक्षा अधूरी है। इन्हें पूरा ज्ञान नहीं मिला।”

राजकुमारी अपने पिता के मुँह से यह सुनकर दंग रह गई। उन्होंने सोचा था कि महाराज मेरे उत्तर से प्रसन्न हो गए होंगे, पर उन्होंने तो मुझे दंड दे दिया। राजकुमारी अपनी आँखों में आँसू लिए महल से बाहर आई।

मंत्री जी ने घोड़े पर बैठने को कहा। राजकुमारी घोड़े पर चढ़कर बैठ गई। मंत्री जी के साथ दो सिपाही और अपने-अपने घोड़े पर चढ़कर जंगल की ओर रवाना हो गए। राज्य से बाहर निकलकर मंत्री ने राजकुमारी से कहा, आपका उत्तर तो सबसे सर्वश्रेष्ठ था। पर आपको सजा क्यों मिली, मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ।

राजकुमारी ने उत्तर दिया - मैं, महाराज से नाराज नहीं हूँ। दुनिया का दस्तूर यही है - आप लोगों के विचार से हटकर कुछ करते हो या कहते हो, तो दुनिया उसे समझ नहीं पाती। इस वजह से मुझे सजा मिल गई है। मंत्री ने राजकुमारी से कहा, आप परेशान न हों। मैं, अभी महल जाकर महाराज को बताता हूँ

और मैं, अभी आपके साथ यहाँ दो सिपाहियों को छोड़कर जाता हूँ। यह बोलकर मंत्री महल की ओर रवाना हो जाते हैं।

मंत्री जी महल पहुँचकर सबसे पहले रसोईघर में जाते हैं और बिना नमक के पकवान बनवाने को रसोइये से कहते हैं। उस पकवान को एक थाल में लगवाकर दरबार में उपस्थित हो जाते हैं। उस थाल को महाराज के पास पेश किया जाता है। थाल में तरह-तरह के पकवान देखकर महाराज कुछ समझ नहीं पाते।

महाराज मंत्री से पूछते हैं, “क्या है यह सब ? राजकुमारी को आप जंगल छोड़ आए ?” मंत्री ने उत्तर दिया, “जी महाराज और साथ ही आपके लिए यह भोजन है। आप इसे चखें और बताएं कि कैसा बना है।” महाराज जैसे ही खाना चखते हैं, वह खाने को थूक देते हैं और “मंत्री जी से कहते हैं, मंत्री जी, यह क्या है ? यह कैसा खाना है ? इस खाने में तो नमक नहीं है। बिना नमक का कोई खाना कैसे खा सकता है ?”

मंत्री ने कहा, “महाराज, क्या आपको लगता है कि खाने में नमक बहुत जरूरी है ? बिना नमक का खाना नहीं खाया जा सकता है ? तो फिर आप अपने ही फैसले पर विचार कीजिए।” महाराज समझ जाते हैं कि मंत्री ने यह थाल क्यों बनवाया है। महाराज को अपनी राजकुमारी की कही बात याद आती है - जितना खाने में नमक जरूरी है, उतना वह राजा से प्यार करती है।

महाराज की आँखों से आँसू आ जाते हैं। वह तुरंत मंत्री जी के साथ जंगल में राजकुमारी के पास पहुँचकर अपनी गलती की माफी माँगते हैं। राजकुमारी को अपने साथ महल लेकर लौट जाते हैं। अपनी गलती के लिए बेटी से क्षमा माँगते हैं और हँसी-खुशी रहने लगते हैं।

मत बाँटो इंसान को

- सुश्री सुनाक्षी दास
बेटी - श्री सहदेव दास
एम.टी.एस.



मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर ने,
बाँट लिया भगवान को,
धरती बाँटी सागर बाँटा,
मत बाँटो इंसान को।

अभी राह तो शुरू हुई है,
मंजिल बहुत दूर है,
उजियाला महलों में बंदी,
हर दीपक मजबूर है।

मिला न सूरज का संदेशा,
हर घाटी मैदान को,
धरती बाँटी सागर बाँटा,
मत बाँटो इंसान को।

अब भी हरी-भरी धरती है,
ऊपर नील वितान है,
पर न प्यार हो तो जग सूना,
जलता रेगिस्तान है।

अभी प्यार का जल देना है,
हर प्यासी चट्टान को,
धरती बाँटी सागर बाँटा,
मत बाँटो इंसान को।

दादी माँ की कहानियाँ



- सुश्री - अमृता दास

सुपुत्री - श्री सुजीत कुमार दास

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

किन बच्चों को दादी माँ की कहानियाँ सुनना पसंद नहीं है ? हर बच्चा बचपन में अपनी-अपनी दादी माँ से अच्छी-अच्छी कहानी सुनाने की फरमाइस करते हैं तथा हर दादी माँ को पूरा करना पड़ता है। जिन हिंदी कहानियों से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है जो कि जीवन में काफी काम आता है।

दादी माँ की कहानियाँ -

आज इसी कड़ी में आगे बढ़ते हुए हम आपके लिए दादी माँ की कहानियाँ की बेस्ट कहानी “इकबाल ने स्वादिष्ट भोज खाया” लेकर आये हैं। आइये जानते हैं -

इकबाल ने स्वादिष्ट भोज खाया - मध्य सुमात्रा में एक नदी बहती थी। उसी नदी के किनारे एक इकबाल नाम का एक आदमी रहता था। वह अपना जीवनयापन के लिए, वहां के लोगों को कुरान पढ़कर सुनाया करता था। इकबाल को लोग धर्म गुरु के नाम से भी पुकारा करते थे। इसलिए न सिर्फ अपने गाँव में बल्कि आसपास के गांवों में भी उसका बड़ा मान था। इकबाल के गांव के दोनों तरफ घनी आबादी वाले गांव थे। एक तो धारा की दिशा में और एक धारा के विपरित दिशा में। यह एक इत्तिफाक की बात थी। एक ही दिन में एक ही समय पर इन दोनों पड़ोसी गांव के दो धनी व्यक्ति ने भोजन का आयोजन रखा। इकबाल बहुत प्रसन्न था क्योंकि वह दोनों जगह निमंत्रित था। भोज वाले दिन इकबाल ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और घर से निकल पड़ा। आगे

जाकर वह तय नहीं कर पा रहा था कि वह पहले किस गाँव में जाए। रास्ते में कुछ लोग आपस में बातें करते मिले की नदी के धारा वाली दिशा के धनी व्यक्ति के घर में दो मिठाइयाँ बनी है और नदी के विपरीत दिशा वाले धनी व्यक्ति के घर पांच तरह कि मिठाइयाँ बनी है। वह सोच लिया कि जहां पांच तरह कि मिठाइयाँ बनी है उसी गांव में पहले जाना है। जब वह उस गांव में पहुंचा तो वहां लोग उसके खाने के बारे में बुराईयाँ कर रहे थे कि खाना बनाया तो बहुत है पर खाने में स्वाद ही नहीं है। उससे अच्छा होता की दो मिठाइयाँ ही बनवाता तो बावर्ची खाने में ज्यादा ध्यान देते और खाना लजीज होता जैसा एक और कि यहां हम भोज खा कर आए। उसका खाना कितना लजीज था और खाना भी वह शाम से ही खीला रहा है। यह सुनते ही इकबाल वहां से उल्टे पैर फिर से निकल जाता है। अंधेरी रात थी उस दिन इकबाल जल्दी-जल्दी उस गांव में दुबारा पहुंचता है। जहां भोजन शाम से ही हो रहा था। पर ये क्या इकबाल जब पहुंचा तो भोज खत्म हो चुका था। बिल्कुल सुन शान सा पड़ा हुआ था, सारे गांव के लोग खा कर सो चुके थे।

इकबाल का मन छोटा हो जाता है। रात भी काफी हो चुकी थी। इकबाल के पैरों में मानों अब जान ही नहीं थी, उसे जोरो से भूख भी लगी हुई थी, वह फिर दुसरे गांव की ओर चल देता है, दिमाग उसका तेज भाग रहा होता है पर शरीर एक दम धीरे-धीरे चलता हुआ आखीर में गांव में पहुंचता है। इकबाल के आंखों में आंसू आ जाते हैं। गांव पहुंचते ही अब यहां

भी भोज खत्म हो चुका होता है पर कुछ लोग कुर्सी और टेबल मोड़ रहे होते हैं, वह इकबाल को देखते ही बोलते हैं, धर्म गुरु आप अभी आए हैं ? इकबाल ने जवाब दिया जी बिल्कुल तभी उस गांव का धनी आदमी बोल पड़ता है। धर्म गुरु लगते हैं उस गांव का भोज खाने में कुछ ज्यादा ही देर कर दिए। यहां तो सब बरतन खाली हो चुके हैं, आपको कुछ भी नहीं दे

पाऊंगा। मुझे क्षमा करें। इकबाल ने जवाब दिया कोई बात नहीं फिर मैं, अपने घर को चलता हूं रात भी काफी हो चुकीं हैं। भारी मन से इकबाल लौट जाता हैं और मन-ही-मन खुद को कोसता रहता है अभी मैं, भी स्वादिष्ट भोजन खा चुका होता अगर दुसरे की बात नहीं सुनता तो अधिक के लालच में थोड़ा भी हाथ से चला जाता है।



गुणों की खान नारियल

- श्रीमती सुनिता दास
पत्नी - श्री सहदेब दास
एम.टी.एस.



जमीन पर खुली छतरी की तरह दिखने वाला, ऊँचाई में लंबा और देखने में सुंदर सा मैं, नारियल का पेड़ हूँ। मैं, बहुत वर्ष तक फल देता हूँ। मेरा तना लंबा होता है। मेरे तने के ऊपरी सिर पर लंबी पत्तियों का मुकुट होता है। बांग्ला भाषा में लोग मुझे नारिकल या हिन्दी भाषा में नारियल कहते हैं। मैं, मुख्य रूप से समुद्र के तट पर पाया जाता हूँ। इसके अलावा महाराष्ट्र, मुंबई, गोवा, दक्षिण भारत आदि स्थानों में भी पाया जाता हूँ। मेरा नारियल पानी बहुत ही स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक होता है। मुझसे मलाई भी निकलती है। मेरा पानी हल्का और प्यास बुझाने वाला होता है। मैं, जब कच्चा होता हूँ तब पानी से भरा होता हूँ जिसे दाब कहते हैं। प्रकृति ने मेरे पानी की सुरक्षा के लिए अदभुत प्रबंध किया है। जब मैं, सूख जाता हूँ तब नारियल बन जाता हूँ। मेरा उपयोग विभिन्न प्रकार के व्यंजन के प्रयोग

में होती है। मुझसे बहुत व्यंजन बनता है, जैसे - पीठा, लड्डू, बर्फी इत्यादि व्यंजन बनते हैं। मुझे मशीन में पेरकर तेल निकाला जाता है। उस तेल की मालिश त्वाचा के लिए बहुत अच्छी होती है। दक्षिण भारत में तो लोग मेरे तेल का प्रयोग करके खाना बनाना में भी करते हैं। मैं, खाने में सिर्फ स्वादिष्ट ही नहीं अपितु पौष्टिक भी हूँ। मेरे अंदर प्रचुर मात्रा में फाइबर, विटामिन और खनिज है। मेरे पेड़ की मुख्य विशेषता यह है कि मैं, लोगो को लाभ ही लाभ देता हूँ। मेरे पत्तों का उपयोग लोग अपनी झोपड़ियों की छतों को बनाने में करते हैं। मेरे बाहर वाली अंश को कुट कर रस्सियाँ बनाते हैं एवं विभिन्न प्रकार के खिलौने बनाया जाता है। मुझे अपने ऊपर गर्व है क्योंकि लोग मुझे गुणों की खान कहते हैं।

व्यवहार में दृढ़ता कैसे लाएं

- मुहम्मद अरिफुल हक
भाई - मुहम्मद जियाऊल हक
सहायक निदेशक (राजभाषा)



व्यवहार में दृढ़ता लाने का अर्थ यह कतई नहीं है कि आप दूसरों पर चिल्लाएं, रोब जमाएँ, गुस्सा करें, दोष लगाएं या उन्हें भयभीत करें। दृढ़ होने का अर्थ है कि आप अपने पक्ष में खड़े हैं और साथ ही दूसरों के अधिकारों का भी हनन नहीं कर रहे अर्थात् स्पष्ट शब्दों में अपनी बात कहना या सब के सामने रखना। यह आपकी भावनाओं, इच्छाओं, व विचारों का ईमानदार प्रस्तुतिकरण होता है। इसे प्रायः आपके आत्म-सम्मान व आत्म-छवि से भी जोड़ा जाता है।

बचपन में ही हमारा निजी रवैया और ढंग

विकसित हो जाता है। उसपर हमारे परिवार, माहौल और यारो-दोस्तों का भी असर पड़ता है। यदि बचपन में आपको बड़े अनुशासन में रखें तो हो सकता है आप उन्ही विचारों को जीवन में आगे चल कर पेश करें।

अपने व्यवहार में दृढ़ता लाने के लिए नकारात्मक भाषणों व विचारों से बचना चाहिए जैसे - हो सकता है, मैं, गलती कर रहा था या क्या तुम मेरे लिए ऐसा नहीं करोगे ? ऐसे वाक्यों से आपकी दृढ़ता टूटती है। जब भी आप किसी बात के लिए न कहना चाहे तो स्पष्ट शब्दों में कहें। उस समय शर्मिंदा हो कर या यह

सोच कर कि सामने वाला नाराज होगा, माफी मांगने की जरूरत नहीं हैं।

कई बार दृढ़ता और आत्म-सम्मान की कमी को आपस में जोड़ कर देखा जाता है। आत्म-सम्मान की कमी होने से इंसान अपने आप को हीन महसूस करता है और वह सब के सामने बोल नहीं पाता। यह मनुष्य को कई तरह से प्रभावित करती है। कई लोग इसकी वजह से गुस्सैल और आक्रामक हो जाते हैं। यही बर्ताव उन्हें और भी बुरा बना देता है। कुछ मामलों में बीती बातें याद करके, दृढ़ता अपनाने से हिचकते हैं क्योंकि वह दूसरों को नाराज नहीं करना चाहते।

यदि आपने दृढ़ रवैया नहीं अपनाया तो आपके साथ या नीचे काम करने वाले आपकी योग्यताओं व रवैये को गंभीरता से नहीं लेंगे। यदि बैठक आदि में आपने दृढ़ता से अपना पक्ष नहीं रखा या दूसरों की अप्रसन्नता के भय से अपना मत व्यक्त नहीं किया तो आपके उच्च पदाधिकारी को आपकी योग्यता पर संदेह होने लगेगा।

इस तरह से दूसरों लोग आसानी से आपसे फायदा उठा सकते हैं और आपकी योग्यता पर संदेह कर सकते हैं। कुछ लोग बिना किसी वजह के ही माफी माँगते रहते हैं। यह उनकी अपनी शक्तिहीनता का संकेत होता है। जब तक आपने कोई गलती नहीं की, तो केवल एक माफी या साँरी आपको दोषी बना सकता है। किसी भी परेशानी में अपने परिवार व दोस्तों की मदद लें। दायित्व व परिस्थितियों से

मुहँ न मोड़े। लगातार अभ्यास से अपने भीतर दृढ़ता पैदा करें। यदि आप कहीं दृढ़ता नहीं दिखा पाते तो शर्मिन्दा होने की बजाए अपने-आपसे वादा करें कि आप अगली बार ऐसा नहीं होने देंगे।

मनचाहा फल मिले या नहीं, अपने आपको प्रोत्साहित करते रहें। बेचैनी और व्याकुलता से बचें। अतीत से छूटकर जीवन की नई यात्रा में उसका साथ दें। अपने हृदय से सारी घृणा निकाल कर इसे प्रेम से लबालब भर दें, हालाँकि यह इतना आसान नहीं है परन्तु लगातार प्रयास से संभव है। ऐसा करने पर ही आप स्वयं को मुक्त अनुभव कर पायेंगे।

आप जब भी अपना तर्क प्रस्तुत करें तो अस्पष्ट स्वरों में कहने के बजाए पूरे दम-खम से अपनी बात कहें। बात करते-करते यहां वाक्य खत्म होने वाला हो वहां अपने स्वर को सम पर ले आएँ। किसी से बात करते समय बार-बार सिर न हिलाए, ज़रूरत से ज्यादा न मुस्कुराएँ, अपनी गर्दन एक ओर न झुकाएं और न ही अपनी आँखें फेरें, सीधे नेत्रों का संपर्क बना रहे। गरिमामयी, आरामदायक मुद्रा में बैठे। ध्यान रहे कि आपके चेहरे के भाव आपकी बात से मेल खानी चाहिए। दूसरों की बात को ध्यान से सुने व उन्हें एहसास दिलाएँ कि आप उन्हें सुन रहे हैं। यदि कोई स्पष्टीकरण चाहते हैं तो प्रश्न पूछें। अपनी शक्ति को कम न करें। जब भी आप बात करें तो ध्यान रहे कि आपकी पूरी बात स्पष्टता से सामने वाले तक पहुँच रही है या नहीं ?

बिहार की बाढ़ समस्या : एक गहन अध्ययन और स्थायी समाधान की खोज

- श्री यश नायक,
पुत्र - श्री रितेश आनंद,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



प्रस्तावना (भूमिका) - भारत का पूर्वी राज्य बिहार, जिसे “गंगा का उपहार” कहा जाता है, आज बाढ़ और जल-जमाव की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक से जूझ रहा है। यहाँ की धरती अत्यंत उपजाऊ है, लेकिन हर साल बाढ़ से करोड़ों लोग प्रभावित होते हैं। बाढ़ केवल एक प्राकृतिक आपदा नहीं रह गई है, बल्कि यह अब आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय संकट बन चुकी है। आधिकारिक रिपोर्टों के अनुसार बिहार का लगभग 68% भू-भाग बाढ़ की चपेट में रहता है और 16-20 जिले हर साल किसी न किसी रूप में प्रभावित होते हैं। नेपाल से आने वाली नदियाँ (कोसी, गंडक, बागमती, कमला बलान आदि) और गंगा की मुख्य धारा इस त्रासदी के प्रमुख कारण हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य -

- बिहार में बाढ़ का इतिहास सदियों पुराना है।
- अंग्रेजों के जमाने में भी गंगा और कोसी को “सॉरोज ऑफ बिहार” (बिहार का शोक) कहा गया था।
- 1954 में भारत सरकार ने बाढ़ नियंत्रण नीति बनाई थी और बड़े पैमाने पर तटबंध निर्माण का काम हुआ।
- लेकिन तटबंध बनने से राहत मिलने के बजाय, कई बार पानी के दबाव और नदी की धारा बदलने से और ज्यादा तबाही हुई।

वर्तमान स्थिति -

- आज की स्थिति यह है कि -
- हर साल औसतन 20-25 लाख हेक्टेयर जमीन बाढ़ से प्रभावित होती है।

- 2-3 करोड़ लोग बाढ़ से पीड़ित होते हैं।
- सड़क, रेल, स्कूल, अस्पताल और बिजली ढाँचा बुरी तरह क्षतिग्रस्त होता है।
- करोड़ों की फसल को नुकसान और पशुधन की हानि होती है।
- लाखों लोग हर साल पलायन करने को मजबूर होते हैं।

बाढ़ प्रभावित जिले (केस-स्टडी) -

1. **सीतामढ़ी और मधुबनी** - नेपाल से आने वाली बागमती और कमला नदियाँ बार-बार उफान मारती हैं। गाँव के गाँव डूब जाते हैं।
 - खेतों में धान और मक्का की पूरी फसल बर्बाद हो जाती है।
 - हजारों घर कच्चे मकान ढह जाते हैं।
 - बाढ़ राहत शिविरों में नारकीय स्थिति होती है।
2. **दरभंगा और समस्तीपुर** - यहाँ बागमती और गंडक का जल-जमाव महीनों तक बना रहता है।
 - खेत सूखते नहीं, जिससे रबी फसल बोना असंभव हो जाता है।
 - स्कूल लंबे समय तक बंद रहते हैं।
3. **सुपौल, मधेपुरा और सहरसा** - कोसी नदी का बेसिन हर साल डूबता है।
 - 2008 की कोसी त्रासदी में लाखों लोग विस्थापित हुए।
 - अभी भी लोग तटबंधों के अंदर असुरक्षित रहते हैं।

4. **कटिहार और किशनगंज** - यहाँ महानंदा और गंगा की धारा गाँवों को निगल जाती है।

- हर साल हजारों परिवार पश्चिम बंगाल और असम की ओर पलायन करते हैं।

5. **पूर्वी चंपारण और पश्चिमी चंपारण** - गंडक और बुढ़ी गंडक के जलभराव से यह क्षेत्र डूब जाता है।

- नेपाल के बांध से पानी छोड़ने पर अचानक बाढ़ आती है।

वार्षिक नुकसान -

- **आर्थिक नुकसान** - लगभग रु 7,000 - रु 10,000 करोड़ प्रतिवर्ष।
- **फसल नुकसान** - धान, मक्का, गन्ना, सब्जियाँ पूरी तरह बर्बाद।
- **संपत्ति नुकसान** - लाखों घर बह जाते हैं, सड़कें और पुल टूट जाते हैं।
- **मानव जीवन की हानि** - हर साल सैकड़ों लोग डूबकर मरते हैं।
- **स्वास्थ्य संकट** - डायरिया, मलेरिया, डेंगू जैसी बीमारियाँ फैलती हैं।

सामाजिक प्रभाव -

- **शिक्षा** - बाढ़ के समय स्कूल महीनों तक बंद रहते हैं।
- **पलायन** - लाखों लोग दिल्ली, पंजाब, गुजरात काम की तलाश में जाते हैं।
- **महिलाएँ और बच्चे** - सबसे ज्यादा पीड़ा इन्हें होती है; प्रसव, पोषण, शिक्षा सभी प्रभावित।

- **गरीबी का चक्र** - किसान कर्ज में डूबते हैं और हर साल फिर से वहीं लौट जाते हैं।

मौजूदा सरकारी प्रयास और उनकी सीमाएँ -

- तटबंध और बांध बनाना।
- नाव और राहत शिविर।
- खाने-पीने के पैकेट और थोड़ी आर्थिक मदद।
- समस्या यह है कि यह सब अल्पकालिक समाधान हैं।
- तटबंध टूटने पर और अधिक तबाही होती है।
- राहत सामग्री भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती है।
- स्थायी पुनर्वास की कोई व्यवस्था नहीं है।

अंतर्राष्ट्रीय मॉडल से सीख -

- **नीदरलैंड्स** - यहाँ पूरा देश समुद्र तल से नीचे है, लेकिन डेल्टा प्लान और उन्नत जल प्रबंधन से बाढ़ को लगभग खत्म कर दिया गया है।
- **जापान** - नदियों को नियंत्रित करने के लिए भूमिगत टनल और हाई-टेक सिंचाई व्यवस्था।
- **चीन** - थ्री गॉर्जेज डैम और बड़े पैमाने पर जलाशय।

बिहार के लिए व्यावहारिक समाधान -

1. नेपाल से जल प्रबंधन समझौता

- नेपाल से आने वाली नदियाँ मुख्य समस्या हैं।
- द्विपक्षीय समझौते के तहत बाँध और जलाशय बनाने होंगे।

2. बड़े जलाशय और जल संरचना

- उत्तर बिहार में बड़े जलाशय बनाए जाएँ।

- अतिरिक्त पानी को सिंचाई और बिजली उत्पादन में इस्तेमाल किया जाए।

3. नदियों का वैज्ञानिक ड्रेजिंग

- गाद (Silt) निकालकर नदियों की गहराई बढ़ाई जाए।

4. स्मार्ट बाढ़ पूर्वानुमान प्रणाली

- सैटेलाइट और AI आधारित चेतावनी प्रणाली गाँव तक पहुँचाई जाए।

5. स्थायी पुनर्वास योजना

- तटबंधों के अंदर रहने वाले लाखों लोगों का पुनर्वास सुरक्षित जगह किया जाए।

6. फसल बीमा और वैकल्पिक खेती

- जोखिम को कम करने के लिए किसानों को फसल बीमा और बाढ़-रोधी किस्में उपलब्ध कराई जाएँ।

निष्कर्ष - बिहार की बाढ़ केवल एक प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि यह मानव-निर्मित और नीति-निर्माण की असफलता भी है। हर साल राहत और अस्थायी इंतजाम करने से कुछ नहीं होगा। जरूरत है -

- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नेपाल से तालमेल की,
- स्थायी जलाशय और ड्रेजिंग प्रोजेक्ट्स की,
- और केंद्र एवं राज्य सरकार की ठोस राजनीतिक इच्छाशक्ति की।

यदि यह नहीं हुआ तो बिहार के करोड़ों लोग हर साल इसी त्रासदी में जीते रहेंगे।

हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह 2024 : एक संक्षिप्त विवरण

हिन्दी कक्ष (लेखापरीक्षा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 30 सितम्बर, 2024 को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. फिल्मेका मारबनियांग, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेहू), शिलांग उपस्थित थी।

इस अवसर पर श्री मैथ्यूस मैथ्यू, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में सभा में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियाँ दीं तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की। उन्होंने अवगत कराया कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य हिंदीतर भाषी कर्मिकों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी भाषा में दक्ष बनाना है। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कार एवं प्रोत्साहन राशियाँ प्रदान की जाती हैं, जिनसे उन्हें हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलती है। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने से कर्मिकों का हिंदी में काम करने के प्रति आत्मविश्वास भी उत्पन्न होता है।

इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिकाओं क्रमशः पूर्वाशा का 33 वें अंक और नवीण पूर्वाचल संदेश का 19 वें अंक, का विमोचन मुख्य अतिथि कैल्विन तथा श्री जॉन के. सेलाटे, महानिदेशक एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और श्री कैल्विन हैरिस खारशींग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की पूर्वाशा पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों में क्रमशः श्रीमती केशु रानी, श्री सुमित कुमार बर्मण और श्री संजीव कुमार गणेश को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस अवसर पर वर्ष 2023-24 हेतु हिंदी में कार्य करने वाले श्रेष्ठ अनुभाग अर्थात् ए.एम.जी.-II को विभागीय रनिंग शील्ड मुख्य अतिथि महोदय के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया। इसके अलावा विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं जैसे, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन एवं हस्तलेखन, प्रश्नोत्तरी और आशु भाषण प्रतियोगिता इत्यादि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए नकद पुरस्कार क्रमशः रु. 2,500, रु. 2,000 और रु. 1,500 समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा प्रदान किए गए। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया एवं बच्चों को उपहार प्रदान किए गए। अन्त में इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग के उप महालेखाकार (प्रशासन), श्री रातुल चन्द्र बोरा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

इस कार्यालय से सेवा निवृत्त कर्मचारियों का विवरण (सितम्बर 2024 से अगस्त 2025 तक)

नाम एवं पदनाम

सेवा निवृत्ति तिथि

- | | |
|---|--------------|
| 1. सुश्री वानाइबोन रिसाओ, सहायक पर्यवेक्षक | (30-09-2024) |
| 2. श्रीमती यूफ्रेसी नोंगकिन्निह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक | (31-07-2025) |

“पूर्वाशा” परिवार उपरोक्त सेवानिवृत्त कर्मचारियों के स्वास्थ्य, सक्रिय एवं दीर्घायु जीवन की तहे दिल से मंगल कामना करता है।

- सम्पादक मण्डल





कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग - 793001